प्रकाशककी ओरसे

पिछले पाँच वर्षोंमें 'कहानी-संग्रह' भाग २ के छ संस्करण समाप्त हो चुके हैं। आज हमें यह सातवाँ संस्करण अपने परिचय परीक्षाके विद्यार्थियोंके हाथोंमें देते प्रसन्नता होती है।

अिस संग्रहको श्री हरिहर शर्मा और श्री मुरलीधर सबनीसने १९३९ में तैयार किया था। कहानियोंके चुनावमें श्री हृषीकेश शर्मा तथा श्री रामेश्वर दयाल दुबेसे काफी सहायता मिली थी।

अिस पुस्तकमें हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा स्वीकृत स्वरों और व्यंजनोंके नये रूपोंका प्रयोग किया गया है।

जिन सहृदय लेखकोंने अपनी कहानियाँ छापनेके लिये अिजाजत दी थी, अुन सबके हम कृतज्ञ हैं।

मंत्री

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

विषय-सूची

कहानी	लेखक	पृष्ठ
१. अपना अपना भाग्य	श्री. जैनेंद्रकुमार	१
२. मिठाईवाला	" भगवतीप्रसाद वाजपेयी	१२
३. अमर जीवन	" सुदर्शन	२१
४. शरणागत	" वृंदावनलाल वर्मा	३१
५. मधुआ	" जयशंकर प्रसाद	४१
६. आत्माराम	" प्रेमचंद	५०
७. इक्केवाला	" विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'	६०
कठिन शब्दार्थ		७१

अपना अपना भाग्य

बहुत कुछ निरुद्देश्य घूम चुकनेपर हम सड़कके किनारेकी अेक बेंचपर बैठ गये ।

नैनीतालकी संध्या धीरे धीरे अुतर रही थी । रुअीके रेशे-से भाप-से बादल हमारे सिरोंको छू छूकर बेरोक घूम रहे थे । हल्के प्रकाश और अँधियारीसे रँगकर कभी वे नीले दीखते, कभी सफ़ेद और फिर देरमें अरुण पड़ जाते । वे जैसे हमारे साथ खेलना चाह रहे थे ।

पीछे हमारे प्रोलोवाला मैदान फैला था । सामने अँगरेज़ोंका अेक प्रमोद-गृह था, जहाँ सुहावना, रसीला बाजा बज रहा था और पार्श्वमें था वही सुरम्य अनुपम नैनीताल ।

तालमें किश्तियाँ अपने सफ़ेद पाल अुड़ाती हुअीं अेक-दो अँगरेज़ यात्रियोंको लेकर, अिधरसे अुधर और अुधरसे अिधर खेल रही थीं । कहीं कुछ अँगरेज अेक अेक देवी सामने प्रतिस्थापित कर, अपनी सुअी-सी शक्लकी डोंगियोंको, मानो शर्त बाँधकर सरपट दौड़ा रहे थे । कहीं किनारेपर कुछ साहब अपनी बंसी डाले, सधैर्य, अेकाग्र, अेकस्थ, अेकानिष्ठ मछली-चिन्तन कर रहे थे ।

पीछे पोलो-लॉनमें बच्चे किलकारियाँ भरते हुअे हाकी खेल रहे थे। शोर, मार-पीट, गाली-गलौज भी जैसे खेलका ही अंश था। अिस तमाम खेलको अुतने क्षणोंका अुद्देश बना, वे बालक अपना सारा मन, सारी देह, समग्र बल और समूची विद्या लगाकर मानों खतम कर देना चाहते थे। अुन्हें आगेकी चिन्ता न थी, बीतेका ख्याल न था। वे शुद्ध तत्कालके प्राणी थे। वे शब्दकी सम्पूर्ण सचाअीके साथ जीवित थे।

सड़कपरसे नर-नारियोंका अविरल प्रवाह आ रहा था और जा रहा था। अुसका न ओर था, न छोर। यह प्रवाह कहाँ जा रहा था और कहाँसे आ रहा था, कौन बता सकता है? सब अुम्रके, सब तरहके, लोग अुसमें थे, मानो मनुष्यताके नमूनोंका बाजार सजकर सामनेसे अिठलाता निकला चला जा रहा हो।

अधिकार-गर्वमें तने अंगरेज़ अुसमें थे और चिथड़ोंसे सजे घोड़ोंकी बाग थामे, वे पहाड़ी अुसमें थे, जिन्होंने अपनी प्रतिष्ठा और सम्मानको कुचलकर शून्य बना लिया है और जो बड़ी तत्परतासे दुम हिलाना सीख गये हैं।

भागते, खेलते, हँसते, शरारत करते, लाल लाल अँगरेज़ बच्चे थे और पीली पीली आँखें फाड़े, पिताकी अुँगली पकड़कर चलते हुअे अपने हिन्दुस्तानी नौनिहाल भी थे।

अँगरेज़ पिता थे, जो अपने बच्चोंके साथ भाग रहे थे, हँस रहे थे और खेल रहे थे। अुधर भारतीय पितृदेव भी थे, जो बुजुर्गीको अपने चारो तरफ लपेटे धन-सम्पन्नताके लक्षणोंका प्रदर्शन करते हुअे चल रहे थे।

अँगरेज़ रमणियाँ थीं, जो धीरे नहीं चलती थीं, तेज़ चलती

थीं । अुन्हें न चलनेमें थकावट आती थी, न हँसनेमें मौत आती थी । कसरतके नामपर घोड़ेपर भी बैठ सकती थीं, और घोड़ेके साथ-ही साथ, ज़रा जी होते ही, किसी किसी हिंदुस्तानीपर कोड़े भी फटकार सकती थीं । वह दो दो, तीन तीन, चार चारकी टोलियोंमें निःशंक, निरापद, अिस प्रवाहमें मानों अपने स्थानको जानती हुअी, सड़कपरसे चली जा रही थीं ।

अुधर हमारी भारतकी कुल-लक्ष्मी, सड़कके बिल्कुल किनारे, दामन बचाती और सम्हालती हुअी, साड़ीकी कअी तहोंमें सिमट सिमटकर, लोग-लाज, स्त्रीत्व और भारतीय गरिमाके आदर्शको अपने परिवेष्टनोंमें छिपाकर सहमी सहमी धरतीमें आँख गाड़े, क़दम क़दम बढ़ रही थीं ।

अिसके साथ ही भारतीयताका अेक और नमूना था । अपने कालेपनको खुरच खुरचकर बहा देनेकी अिच्छा करनेवाले अँगरेज़ी-दाँ पुरुषोत्तम भी थे, जो नेटिवोंको देखकर मुँह फेर लेते थे और अँगरेज़को देखकर आँखें बिछा देते थे और दुम हिलाने लगते थे । वैसे वह अकड़कर चलते थे—मानो भारतभूमिको अिसी अकड़के साथ कुचल कुचलकर चलनेका अुन्हें अधिकार मिला है ।

घण्टे-के-घण्टे सरक गये । अन्धकार गाढ़ा हो गया । बादल सफ़ेद होकर जम गये । मनुष्योंका वह ताँता अेक अेक कर क्षीण हो गया । अब अिक्का-दुक्का आदमी सड़कपर छत्री लगाकर निकल रहा था । हम वहीं-के-वहीं बैठे थे । सर्दी-सी मालूम हुअी । हमारे ओवर-कोट भीग गये थे ।

पीछे फिरकर देखा । वह लाल बर्फ़की चादरकी तरह बिलकुल स्तब्ध और सुन्न पड़ा था ।

सब सन्नाटा था। तल्लीतालकी बिजलीकी रोशनियाँ दीप-मालिका-सी जगमगा रही थीं। वह जगमगाहट दो मील तक फैले हुअे प्रकृतिके जल-दर्पणपर प्रतिबिम्बित हो रही थी; और दर्पणका काँपता हुआ, लहरें लेता हुआ वह जल, प्रतिबिम्बोंको सौगुना, हजार गुना करके, अुनके प्रकाशको मानो अेकत्र और पुंजीभूत करके व्याप्त कर रहा था। पहाड़ोंके सिरपरकी रोशनियाँ तारों-सी जान पड़ती थीं।

हमारे देखते देखते अेक घने पर्देने आकर अिन सबको ढँक दिया। रोशनियाँ मानो मर गयीं। जगमगाहट लुप्त हो गयी। वह काले काले भूत-से पहाड़ भी अिस सफेद पर्देके पीछे छिप गये। पासकी वस्तु भी न दीखने लगी, मानो यह घनीभूत प्रलय था। सब कुछ अिस घनी गहरी सफेदीमें दब गया। अेक शुभ्र महा-सागरने फैलकर संसृतिके सारे अस्तित्वको डुबो दिया। अूपर-नीचे, चारों तरफ़, निर्भेद्य, सफेद शून्यता ही फैली हुअी थी।

अैसा घना कुहरा हमने कभी न देखा था। वह टप टप टपक रहा था।

मार्ग अब बिलकुल निर्जन—चुप था। वह प्रवाह न जाने किन घोंसलोंमें जा छिपा था।

अुस बृहदाकार शुभ्र शून्यमें, कहींसे ग्यारह बार टन् टन् हो अुठा, जैसे कहीं दूर कब्रमेंसे आवाज़ आ रही हो।

हम अपने अपने होटलोंके लिये चल दिये।

३

रास्तेमें दो मित्रोंका होटल मिला। दोनों वकील मित्र छुट्टी

लेकर चले गये। हम दोनों आगे बढ़े। हमारा होटल आगे था।

तालके किनारे किनारे हम चले जा रहे थे। हमारे ओवरकोट तर हो गये थे। बारिश नहीं मालूम होती थी, पर वहाँ तो ऊपर-नीचे हवाके कण कणमें बारिश थी। सर्दी अितनी थी कि सोचा, कोटपर अेक कम्बल और होता तो अच्छा होता।

रास्तेमें तालके बिलकुल किनारे अेक बेंच पड़ी थी। मैं जीमें बेचैन हो रहा था। झटपट होटल पहुँचकर अिन भीगे कपड़ोंसे छुट्टी पा, गरम बिस्तरेमें छिपकर सो रहना चाहता था; पर साथके मित्रकी सनक कब अुठेगी, कब थमेगी—अिसका पता न था। और वह कैसी क्या होगी—अिसका भी कुछ अन्दाज़ न था। अुन्होंने कहा—"आओ, जरा यहाँ बैठें।"

हम अुस चूते कुहरे रातके ठीक अेक बजे तालाबके किनारेकी अुस भीगी, बर्फ़-सी ठंडी हो रही लोहेकी बेंचपर बैठ गये।

५....१०....१५ मिनिट हो गये। मित्रके अुठनेका अिरादा न मालूम हुआ। मैंने खिसियाकर कहा—

"चलिये भी....!"

"अरे, ज़रा बैठो भी...."

हाथ पकड़कर ज़रा बैठनेके लिये जब अिस जोरसे बैठा लिया गया तो और चारा न रहा—लाचार बैठ रहना पड़ा। सनकसे छुटकारा आसान न था, और यह ज़रा बैठना ज़रा न था, बहुत था।

चुपचाप बैठे तंग हो रहा था, कुढ़ रहा था कि मित्र अचानक बोले—

"देखो....वह क्या है!"

मैंने देखा—कुहरेकी सफेदीमें कुछ ही हाथ दूरसे अेक काली-सी

सूरत हमारी तरफ बढ़ी आ रही थी। मैंने कहा—“होगा कोई।”

तीन गजकी दूरीसे दीख पड़ा, अेक लड़का सिरके बड़े बड़े बालोंको खुजलाता हुआ चला आ रहा है। नंगे पैर है, नंगे सिर। अेक मैली-सी कमीज़ लटकाये है। पैर अुसके न जाने कहाँ पड़ रहे हैं, और वह न जाने कहाँ जा रहा है—कहाँ जाना चाहता है। अुसके कदमोंमें जैसे कोई न अगला है, न पिछला है। न दायाँ है, न बायाँ है।”

पासकी चुंगीकी लालटेनके छोटे-से प्रकाश-वृत्तमें देखा—कोई दस बरसका होगा। गोरे रंगका है, पर मैलसे काला पड़ गया है। आँखें अच्छी बड़ी, पर रूखी हैं। माथा जैसे अभीसे झुर्रियाँ पा गया है।

वह हमें न देख पाया। वह जैसे कुछ भी नहीं देख रहा था—न नीचेकी धरती, न ऊपर चारों तरफ फैला हुआ कुहरा, न [illegible] और न बाकी दुनिया। वह बस अपने विकट [illegible] देख रहा था।

मैंने आवाज़ दी—“ओ!”

अुसने ठिठक कर देखा और पास आ गया।

“कहाँ जा रहा है रे?”

[illegible] बड़ी-बड़ी आँखें फाड़ दीं।

“[illegible], मैं पूछता हूँ, [illegible] कहाँ घूम रहा है?”

[illegible] भी [illegible] हुआ चेहरा ऊपर [illegible]

[illegible]

[illegible]

"यहीं कहीं।"

"कल कहाँ सोया था ?"

"दूकानपर।"

"आज वहाँ क्यों नहीं ?"

"नौकरीसे हटा दिया।"

"क्या नौकरी थी ?"

"सब काम। अेक रुपया और जूठा खाना।"

"मेरे साथ रहेगा ?"

"हाँ............"

"बाहर चलेगा ?"

"हाँ............"

"आज क्या खाना खाया ?"

"कुछ नहीं।"

"अब खाना मिलेगा ?"

"नहीं मिलेगा।"

"यों ही सो जायगा ?"

"हाँ।"

"कहाँ"

"यहीं कहीं।"

"अिन्हीं कपड़ोंसे ?"

बालक फिर आँखोंसे बोलकर मूक खड़ा रहा। आँखें मानों बोलतीं थीं—"यह भी कैसे मूर्ख प्रश्न !"

"माँ-बाप है ?"

"हैं।"

"कहाँ ?"

"अजी, ये पहाड़ी बड़े शैतान होते हैं। बच्चे बच्चेमें गुन छिपे रहते है। आप भी क्या हैं—अुठा लाये कहींसे–लो जी, यह नौकर लो।"

"मानिये तो, यह लड़का अच्छा निकलेगा।"

"आप भी..........जी, बस खूब हैं। अैरे-गैरेको नौकर बना लिया जाय और अगले दिन वह न जाने क्या क्या लेकर चम्पत हो जाय।"

"आप मानते ही नहीं, मैं क्या करूं?"

"मानें क्या खाक?—आप भी.......जी, अच्छा मजाक करते हैं।....अच्छा, अब हम सोने जाते हैं।"

और वह चार रुपये रोजके किरायेदार कमरेमें सजी मसहरीपर सोने झटपट चले गये।

४

वकील साहबके चले जानेपर, होटलके बाहर आकर मित्रने अपनी जेबमें हाथ डालकर कुछ टटोला। पर झट कुछ निराश भावसे हाथ बाहर कर मेरी ओर देखने लगे।

"क्या है?"

"अिसे खानेके लिये कुछ देना चाहता था,"—अँग्रेज़ीमे मित्रने कहा—"मगर, दस दसके नोट हैं।"

"नोट ही शायद मेरे पास हैं, देखूँ?"

सचमुच मेरे पाकिटमें भी नोट ही थे। हम फिर अँग्रेज़ीमें बोलने लगे। लड़केके दाँत बीच-बीचमें कटकट अुठते थे। कड़ाकेकी सर्दी थी।

दूसरे दिन नैनीताल—स्वर्गके किसी काले गुलाम पशुके दुलारका वह बेटा—वह बालक, निश्चित समयपर हमारे 'होटल डि पब'-में नहीं आया। अपनी नैनीताल-सैर खुशी खुशी खतम कर चलनेको हुअे। अुस लड़केकी आस लगाये बैठे रहनेकी ज़रूरत हमने न समझी।

मोटरमें सवार होते ही थे कि यह समाचार मिला कि पिछली रात अेक पहाड़ी बालक, सड़कके किनारे, पेड़के नीचे ठिठुरकर मर गया।

मरनेके लिये अुसे वही जगह, वही दस बरसकी अुम्र और वही काले चिथड़ोंकी कमीज़ मिली! आदमियोंकी दुनियाँने बस यही अुपकार अुसके पास छोड़ा था।

पर, बतानेवालोंने बताया कि गरीबके मुँहपर, छाती, मुट्ठी और पैरोंपर बरफकी हलकी-सी चादर चिपक गयी थी, मानो दुनियाँकी बेहयायी ढकनेके लिये प्रकृतिने शवके लिये सफ़ेद और ठण्डे कफ़नका प्रबन्ध कर दिया।

सब सुना और सोचा—अपना अपना भाग्य!

मिठाअीवाला

बहुत ही मीठे स्वरोंके साथ वह गलियोंमें घूमता हुआ कहता—“बच्चोंको बहलानेवाला, खिलौनेवाला...........!”

अिस अधूरे वाक्यको वह अैसे विचित्र, किन्तु मादक मधुर ढंगसे गाकर कहता कि सुननेवाले अेक बार अस्थिर हो अुठते। अुसके स्नेहाभिषिक्त कण्ठसे फूटा हुआ अुपर्युक्त गान सुनकर निकटके, मकानमें हलचल मच जाती। छोटे छोटे बच्चोंको अपनी गोदमें लिये-हुअे युवतियाँ चिकोंको अुठाकर छज्जोंपरसे नीचे झाँकने लगतीं। गलियों और अुनके अन्तर्व्यापी छोटे छोटे अुद्यानोंमें खेलते और अिठलाते हुअे बच्चोंका झुण्ड अुसे घेर लेता, और तब वह खिलौनेवाला वहीं कहीं बैठकर खिलौनेकी पेटी खोल देता।

बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो अुठते। वे पैसे लाकर खिलौनोंका मोल-भाव करने लगते। पूछते—“अिछका दाम क्या है, औल अिछका, औल अिछका?” खिलौनेवाला बच्चोंको देखता, अुनकी नन्हीं नन्हीं अँगुलियों और हथेलियोंसे पैसे ले लेता और बच्चोंके अिच्छानुसार अुन्हें खिलौने दे देता। खिलौने लेकर फिर बच्चे अुछलने-कूदने लगते और तब फिर खिलौनेवाला अुसी प्रकार गाकर कहता “बच्चोंको बहलानेवाला, खिलौनेवाला...........!” सागरकी हिलोरकी भाँति अुसका यह मादक गान गली-भरके मकानोंमें, अिस ओरसे अुस ओर तक, लहराता हुआ पहुँचता और खिलौनेवाला आगे बढ़ जाता।

राय विजयबहादुरके बच्चे भी अेक दिन खिलौने लेकर घर आये। वे दो बच्चे थे—चुन्नू और मुन्नू। चुन्नू जब खिलौना ले आया, तो बोला—"मेला घोला कैछा छुन्दल अै!"

मुन्नू बोला—"औल, मेला आती कैसा छुन्दल अै!"

दोनों अपने हाथी-घोड़े लेकर घर-भरमें अुछलने लगे। अुन बच्चोंकी माँ, रोहिणी कुछ देर तक खड़े खड़े अुनका खेल निरखती रही। अन्तमें दोनों बच्चोंको बुलाकर अुसने अुनसे पूछा—"अरे ओ चुन्नू-मुन्नू, ये खिलौने तुमने कितनेमें लिये हैं?"

मुन्नू बोला—"दो पैछेमें खिलौनेवाला दे गया अै।"

रोहिणी सोचने लगी—"अितने सस्ते कैसे दे गया है, कैसे दे सकता है? यह तो वही जाने। लेकिन दे तो गया ही है, अितना तो निश्चय है।"

अेक ज़रा-सी बात ठहरी, रोहिणी अपने काममें लग गयी। फिर कभी अुसे अिसपर विचार करनेकी आवश्यकता ही भला क्यों पड़ती?

२

छ महीने बाद।

नगर-भरमें दो ही चार दिनोंमें अेक मुरलीवालेके आनेका समाचार फैल गया। लोग कहने लगे—"भाअी वाह! मुरली बजानेमें वह अेक ही अुस्ताद है। मुरली बजाकर, गाना सुनाकर, वह मुरली बेचता भी है, सो भी दो दो पैसे। भला अिसमें अुसे क्या मिलता होगा। मिहनत भी न आती होगी।"

अेक व्यक्तिने पूछ दिया—"कैसा है वह मुरलीवाला, मैंने तो अुसे नहीं देखा !"

अुत्तर मिला—"अुमर तो अुसकी अभी अधिक न होगी, यही तीस-बत्तीसका होगा। दुबला-पतला गोरा युवक है, बीकानेरी रंगीन साफा बाँधता है।"

"वही तो नहीं, जो पहले खिलौने बेचा करता था ?"

"क्या वह पहले खिलौने भी बेचता था ?"

"हाँ, जो आकार-प्रकार तुमने बतलाया, अुसी प्रकारका वह भी था।"

"तो वही होगा। पर भाअी, है वह अेक ही अुस्ताद।"

प्रतिदिन अिसी प्रकार अुस मुरलीवालेकी चर्चा होती। प्रतिदिन नगरकी प्रत्येक गलीमें अुसका मादक-मृदुल स्वर सुनाअी पड़ता—"बच्चोंको बहलानेवाला मुरलीवाला........!"

रोहिणीने भी मुरलीवालेका यह स्वर सुना। तुरन्त ही अुसे खिलौनेवालेका स्मरण हो आया। अुसने मन-ही-मन कहा—"खिलौनेवाला भी अिसी तरह गाकर खिलौने बेचा करता था।"

रोहिणी अुठकर अपने पति विजयबाबूके पास गयी, बोली—"ज़रा अुस मुरलीवालेको बुलाओ तो, चून्नू-मुन्नूके लिये ले लूँ। क्या जानें, यह फिर अिधर आये, न आये। वे भी, जान पड़ता है, पार्कमें खेलने निकल गये हैं।"

विजयबाबू अेक समाचार-पत्र पढ़ रहे थे। अुसी तरह अुसे लिये हुअे वे दरवाज़ेपर आकर मुरलीवालेसे बोले—"क्यों भाअी, किस तरह देते हो मुरली ?"

किसीकी टोपी गलीमें गिर पड़ी। किसीका जूता पार्कमें ही

छूट गया और किसीकी सोथनी (पायजामा) ही ढीली होकर लटक आयी। अिस तरह दौड़ते-हाँफते हुअे बच्चोंका झुण्ड आ पहुँचा। अेक स्वरसे सब बोल अुठे—"अम बी लेंदे मुल्ली, औल अम बी लेंदे मुल्ली!"

मुरलीवाला हर्ष-गद्गद् हो अुठा। बोला—"सबको देंगे भैया, ज़रा रुको, ज़रा ठहरो, अेक अेकको लेने दो। अभी अितनी जल्दी हम कहीं लौट थोड़े ही जायँगे। बेचने तो आये ही है, और हैं भी अिस समय मेरे पास अेक दो नहीं, पूरी सत्तावन।....हाँ बाबूजी, क्या पूछा था आपने, कितनेमें दी?....दी तो वैसे तीन तीन पैसेके हिसाबसे हैं, पर आपको दो दो पैसेमें ही दे दूँगा!"

विजयबाबू भीतर-बाहर दोनों रूपोंमें मुस्करा दिये। मन-ही-मन कहने लगे—"कैसा ठग है! देता सबको अिसी भावसे है, पर मुझपर अुलटा अेहसान लाद रहा है। फिर बोले—"तुमलोगोंकी झूठ बोलनेकी आदत ही होती है। देते होंगे सभीको दो दो पैसेमें, पर अेहसानका बोझा मेरे ही अूपर लाद रहे हो!"

मुरलीवाला अेकदम अप्रतिभ हो अुठा। बोला—"आपको क्या पता बाबूजी, अिनकी असली लागत क्या है। यह तो ग्राहकोंका दस्तूर होता है कि दूकानदार चाहे हानि ही अुठाकर चीज़ क्यों न बेचे, पर ग्राहक यही समझते हैं—'दूकानदार मुझे लूट रहा है।....' आप भला काहेको विश्वास करेंगे। लेकिन सच पूछिये तो बाबूजी, अिनका असली दाम तीन ही पैसा है। आप कहींसे भी दो दो पैसेमें ये मुरलियाँ नहीं पा सकते। मैंने तो पूरी अेक हज़ार बनवायी थीं, तब मुझे अिस भाव पड़ीं।"

विजयबाबू बोले—"अच्छा अच्छा, मुझे ज्यादा वक्त नहीं है, जल्दीसे दो ठो निकाल दो।"

दो मुरलियाँ लेकर विजयबाबू फिर मकानके भीतर पहुँच गये।

मुरलीवाला देर तक अुन बच्चोंके झुण्डमें मुरलियाँ बेचता रहा। अुसके पास कअी रंगकी मुरलियाँ थीं। बच्चे जो रंग पसन्द करते, मुरलीवाला अुसी रंगकी निकाल देता।

"यह बड़ी अच्छी मुरली है, तुम यही ले लो बाबू, राजा बाबू; तुम्हारे लायक तो यह है।....हाँ, भैये, तुमको वही देंगे। ये लो।.... तुमको वैसी न चाहिये, अैसी चाहिये, यह नारंगी रंगकी, अच्छा, यही लो।....पैसे नहीं है? अच्छा अम्मासे पैसे ले आओ। मैं अभी बैठा हूँ। तुम ले आये पैसे?....अच्छा, ये लो, तुम्हारे लिये मैंने पहले ही से यह निकाल रक्खी थी।....तुमको पैसे नहीं मिले! तुमने अम्मासे ठीक तरहसे माँगे न होंगे। धोती पकड़के, पैरोंमें लिपटके, अम्मासे पैसे माँगे जाते है, बाबू! हाँ, फिर जाओ। अबकी बार मिल जायँगे। दुअन्नी है? तो क्या हुआ, ये छ पैसे वापस लो। ठीक हो गया न हिसाब? ....मिल गये पैसे? देखो, मैंने कैसी तरकीब बतायी! अच्छा, अब तो किसीको नहीं लेना है? सब ले चुके? तुम्हारी माँके पास पैसे नहीं हैं? अच्छा, तुम भी यह लो। अच्छा, तो अब मैं चलता हूँ।"

अिस तरह मुरलीवाला फिर आगे बढ़ गया।

३

आज अपने मकानमे बैठी हुअी रोहिणी मुरलीवालेकी सारी बातें सुनती रही। आज भी अुसने अनुभव किया, बच्चोंके साथ

अितने प्यारसे बातें करनेवाला फेरीवाला पहले कभी नहीं आया। फिर वह सौदा भी कैसा सस्ता बेचता है। भला आदमी जान पड़ता है। समयकी बात है, जो बेचारा अिस तरह मारा मारा फिरता है। पेट जो न कराये सो थोड़ा।

अिसी समय मुरलीवालेका क्षीण स्वर निकटकी दूसरी गलीसे सुनाअी पड़ा—"बच्चोंको बहलानेवाला, मुरलियावाला,....!"

रोहिणी अिसे सुनकर मन-हीं-मन कहने लगी—"और कैसा मीठा स्वर है अिसका!"

बहुत दिनों तक रोहिणीको मुरलीवालेका यह मीठा स्वर और अुसकी बच्चोंके प्रति स्नेह-सिक्त बातें याद आती रहीं। महीने-के-महीने आये और चले गये, पर मुरलीवाला न आया। धीरे धीरे अुसकी स्मृति भी क्षीण होती गयी।

४

आठ मास बाद।

सरदीके दिन थे। रोहिणी स्नान करके अपने मकानकी छत-पर चढ़कर आजानु-विलम्बित केश-राशि सुखा रही थी। अिसी समय नीचेकी गलीमें सुनाअी पड़ा—"बच्चोंको बहलानेवाला, मिठाअीवाला....!"

मिठाअीवालेका यह स्वर परिचित था। झटसे रोहिणी नीचे अुतर आयी। अुस समय अुसके पति मकानमें नहीं थे। हाँ, अुसकी वृद्धा दादी थी। रोहिणी अुनके निकट आकर बोली—"दादी, चुन्नू-मुन्नूके लिये मिठाअी लेनी है। ज़रा कमरेमें चलकर ठहराओ तो। मैं अुधर कैसे जाअूँ, कोअी आता न हो। ज़रा हट-कर मैं भी चिककी ओटमें बैठी रहूँगी।"

दादी अुठकर कमरेमें आकर बोली—"अे मिठाअीवाले, अिधर आना।"

मिठाअीवाला निकट आ गया। बोला—"माँ, कितनी मिठाअी दूँ? ये नयी तरहकी मिठाअियाँ हैं, रंग-बिरंगी, कुछ कुछ खट्टी, कुछ कुछ मीठी, ज़ायकेदार, बड़ी देर तक मुँहमें टिकती हैं। जल्दी नहीं घुलतीं। बच्चे अिन्हें बड़े चावसे चूसते हैं। अिन गुणोंके सिवा ये खाँसीको भी दूर करती हैं। कितनी दूँ? चपटी, गोल और पहलदार गोलियाँ हैं। पैसेकी सोलह देता हूँ।"

दादी बोली—"सोलह तो बहुत कम होती हैं, भला पचीस तो देते।"

मिठाअीवाला—"नहीं दादी, अधिक नहीं दे सकता। अितनी भी कैसे देता हूँ, यह अब मै तुम्हें क्या....। खैर, मैं अधिक तो न दे सकूँगा।"

रोहिणी दादीके पास ही बैठी थी। बोली—"दादी, फिर भी काफ़ी सस्ती दे रहा है, चार पैसेकी ले लो। ये पैसे रहे।"

मिठाअीवाला मिठाअियाँ गिनने लगा।

"तो चारकी दे दो। अच्छा, पचीस न सही, बीस ही दो। अरे हाँ, मैं बूढ़ी हुअी, मोल-भाव मुझे तो अब ज़्यादा करना भी नहीं आता।"—कहते हुअे दादीके पोपले मुँहसे ज़रा-सी मुस-कराहट भी फूट निकली।

रोहिणीने दादीसे कहा—"दादी, अिससे पूछो, तुम अिस शहरमें और भी कभी आये थे, या पहली ही बार आये हो, यहाँके निवासी तो तुम हो नहीं?"

"दादीने अिस कथनको दोहरानेकी चेष्टा की ही थी कि

मिठाओीवालेने अुत्तर दिया—"पहली बार नहीं, और भी कओी बार आ चुका हूँ।"

रोहिणी चिककी आड़ ही से बोली—"पहले यही मिठाओी बेचते हुअे आये थे, या और कोओी चीज़ लेकर?"

मिठाओीवाला हर्ष, संशय और विस्मयादि भावोंमें डूबकर बोला—"अिससे पहले मुरली लेकर आया था, और अुससे भी पहले खिलौने लेकर।"

रोहिणीका अनुमान ठीक ही निकला। अब तो वह अुससे और भी कुछ बातें पूछनेके लिये अस्थिर हो अुठी। वह बोली—"अिन व्यवसायोंमें भला तुम्हें क्या मिलता होगा?"

वह बोला—"मिलता तो भला क्या है, यही खाने-भरको मिल जाता है। कभी नहीं भी मिलता है। पर हाँ, सन्तोष और धीरज और कभी कभी असीम सुख ज़रूर मिलता है और यही मैं चाहता हूँ।"

"सो कैसे? वह भी बताओ।"

"अब व्यर्थमें अुन बातोंकी क्यों चर्चा करूँ, अुन्हें आप जाने ही दें। अुन बातोंको सुनकर आपको दुःख ही होगा।"

"जब अितना बताया है, तब और भी बता दो। मैं बहुत अुत्सुक हूँ। तुम्हारा हर्जा न होगा, और भी मिठाओी मैं ले लूँगी।"

अतिशय गम्भीरताके साथ मिठाओीवालेने कहा—

"मैं भी अपने नगरका अेक प्रतिष्ठित आदमी था। मकान, व्यवसाय, गाड़ी-घोड़े, नौकर-चाकर सभी कुछ था। स्त्री थी, छोटे छोटे दो बच्चे भी थे। मेरा सोनेका संसार था। बाहर सम्पत्तिका वैभव था, भीतर सांसारिक सुख था। स्त्री सुंदरी थी, मेरा

प्राण थी। बच्चे अैसे सुंदर थे, जैसे सोनेके सजीव खिलौने। अुनकी अठखेलियोंके मारे घरमें कोलाहल मचा रहता था। समयकी गति! विधाताकी लीला! अब कोअी नहीं है। दादी, प्राण निकाले नहीं निकले। अिसीलिये अपने अुन बच्चोंकी खोजमें निकला हूँ। वे सब अन्तमें होंगे तो यहीं कहीं। आखिर कहीं-न-कहीं जन्मे ही होंगे। अुस तरह रहता, तो घुल घुलकर मरता। अिस तरह सुख-संतोषके साथ मरूँगा। अिस तरहके जीवनमें कभी कभी अपने अुन बच्चोंकी अेक झलक-सी मिल जाती है। अैसा जान पड़ता है, जैसे वे अिन्हींमें अुछल अुछलकर हँस-खेल रहे है। जो नहीं है, अिस तरह अुसीको पा जाता हूँ।"

रोहिणीने अब मिठाअीवालेकी ओर देखा। देखा—अुसकी आँखें आँसुओंसे तर हैं।

अिसी समय चुन्नू-मुन्नू आ गये। रोहिणीसे लिपटकर अुसका आँचल पकड़कर बोले—"अम्मा, मिठाअी!"

"मुझसे लो"—कहकर तत्काल कागजकी दो पुड़ियोंमें मिठा-अियाँ भरकर मिठाअीवालेने चुन्नू-मुन्नूको दे दीं।

रोहिणीने भीतरसे पैसे फेंक दिये।

मिठाअीवालेने पेटी अुठायी और कहा—"अब अिस बार ये पैसे न लूँगा।"

दादी बोली—"अरे अरे, न न, अपने पैसे लिये जा भाअी!"

तब तक आगे फिर सुनाअी पड़ा, अुसी प्रकार मादक-मृदुल स्वरमें—"बच्चोंको बहलानेवाला, मिठाअीवाला··· !"

अमर जीवन

बाबू अिन्द्रनाथकी क़लममें जादू था। जब लिखने बैठते, साहित्य-सुधाकी धाराअें बह निकलतीं; जैसे पहाड़ोंसे मीठे जलकी नदियाँ फूट निकलती है। अुनकी अुमर अधिक न थी। ज्यादा-से-ज्यादा पचास सालके होंगे। मगर अुनकी कविता और कल्पना देखकर जी खुश हो जाता था। साधारण-से-साधारण विषय लेते तो अुनमें जान डाल देते। अुनके निबन्ध पढ़कर लोग मंत्र-मुग्ध हो जाते। कहते—"मन मोह लेता है!" अुनकी अुपमाअें कैसी सुन्दर हैं, शब्द कैसे मधुर हैं, पाठक किसी दिव्य लोकमें पहुँच जाते हैं! यही जी चाहता है, पढ़ते ही रहें, कभी बन्द न करें। अुनकी रचनामे मनोरंजन, सौन्दर्य, मोहिनी, सब कुछ था, और सबसे बढ़कर सादगी थी। वे अपने पाठकोंपर बड़े बड़े कठिन शब्दोंसे रोब न डालते थे। यह ढंग अुन्हें कभी पसन्द न आता था। अुन्हें जो कुछ कहना होता, सादे और सरल शब्दोंमें कह देते, और यही अुनका सबसे बड़ा गुण था। अेक वर्ष पहले लोग अुनके नामसे भी परिचित न थे, और आज हिन्दीके क्षेत्रमें कोने कोनेमें अुनके नामका डंका बजता था। कोअी छोटे-से-छोटा ग्राम भी अैसा न होगा जिसमें 'भाव-सुषमा' और 'सोम-सागर'की अेक-दो प्रतियाँ न हों। अिन ग्रन्थ-रत्नोंको जो पढ़ता, अुसीपर जादू हो जाता। परन्तु अिन्द्रनाथकी आर्थिक दशा संतोषजनक न थी। अितनी सिरपच्ची करनेके बाद भी अुनको अितनी आय न होती थी कि चिन्ता-रहित जीवन बिता सकते। प्रायः दुखी रहते, और

अपने देशकी शोचनीय दशापर रोया करते। किसे खयाल था कि अुसके प्रान्तका सबसे बड़ा लेखक, सबसे प्यारा कविराज पैसे-पैसेको मुहताज होगा ? अुनका प्रकाशक कमाता था, वे भूखों मरते थे। संसारका यह दुर्व्यवहार देखकर अुनका दिल खट्टा हो जाता, और कभी कभी तो अितने जोशमें आ जाते कि लिखे-लिखाये लेख फाड़ डालते, लेखनी तोड़ देते, और कहते—"अब लिखनेका कभी नाम न लूँगा।"

२

प्रातःकाल था। अिन्द्रनाथ धूपमें बैठे अेक मासिक पत्रिकाके पन्ने अुलटते हुअे मुसकरा रहे थे। अुनकी स्त्री मनोरमाने पूछा—"क्यों ? क्या है, जो अितने खुश हो रहे हो ?"

अिन्द्रनाथने मनोरमाकी तरफ प्रेम-भरी दृष्टिसे देखा और अुत्तर दिया—"भाव-सुषमाकी समालोचना है। बहुत प्रशंसा की है।"

मनोरमाके मनमें अुद्‌गारकी गुदगुदी होने लगी। जरा आगे खिसककर बोली—"प्रशंसा करते हैं, समझते ख़ाक भी नहीं।"

अिन्द्रनाथ—"अरे !"

मनोरमा—"झूठ नहीं है। यहाँके लोग मूर्ख हैं, तुम्हारी कद्र क्या जानें ? भैंसके आगे वीणा बज रही है।"

अिन्द्रनाथ—"मेरी रचनाके गुण-दोष समझनेवाले वास्तवमें थोड़े हैं। सारे शहरमें केवल अेक व्यक्ति है, जिसे अिन बारीकियोंका ज्ञान है।"

मनोरमा—"कौन ?"

अिन्द्रनाथ—"तुम्हें डाह तो न होगा ? वह अेक स्त्री है, पर अैसी योग्यता मैंने किसी पुरुषमें भी नहीं देखी।"

मनोरमाको कुछ संदेह हुआ। धीरेसे बोली—"कौन है ?"

अिन्द्रनाथ—"श्रीमती मनोरमादेवी रानी। तुमने भी तो नाम सुना होगा ?"

मनोरमाने हँसकर मुँह फेर लिया और बोली—"जाओ, तुम तो हँसी करते हो।"

अिन्द्रनाथ—"नहीं मनोरमा! वास्तवमें यह मेरी सम्मति है।"
मनोरमा—"बस, कोअी बनाना तुमसे सीख जाय।"

अिन्द्रनाथ—"मेरी हिम्मत तुम न बढ़ाती तो मैं अितनी अुन्नति कभी न करता।"

मनोरमा—"बड़ी पण्डिता हूँ न ?"

अिन्द्रनाथ—"यह मेरे दिलसे पूछो। सोना अपना मूल्य नहीं जानता।"

मनोरमा—"मगर तुम खुशामद खूब जानते हो।"

अिन्द्रनाथ—"समालोचना सुनोगी ?"

मनोरमा—"सुनाओ।"

अिन्द्रनाथने पढ़ना आरम्भ किया—

"'भाव-सुषमा' हमारे सामने है। हमने अिसे पढ़ा और कअी दिन तक मनपर नशा-सा छाया रहा। अैसा प्रतीत होता है मानो हम किसी अन्य लोकमें आ पहुँचे हैं। अिसमें सौन्दर्य है, अिसमें सादगी है, अिसमें स्वाभाविकता है; अिसमें कल्पना है, अिसमें माधुरी है, अिसमें सरलता है और, क्या कहें—अिसमें सब कुछ है।"

सहसा किसीने नीचेसे आवाज़ दी—"बाबू अिन्द्रनाथ!" अिन्द्रनाथ और मनोरमा दोनों चौंक पड़े, जैसे किसी सुमधुर संगीतके बीचमें कोअी अूँची आवाजसे रोने लगे। अुस समय

रोगीके दिलपर क्या गुजरती है, यह वही समझता है। वह झुँझला अुठता है, लड़ने-मारनेको तैयार हो जाता है।

बाबू अिन्द्रनाथने पत्रिका चारपाअीपर रख दी, और नीचे गये। वापस आये, तो अुनका चेहरा अुदास था और आँखोंमें आँसू लहरा रहे थे।

मनोरमाने पूछा—"कौन था ?"

अिन्द्रनाथ—"मकान-मालिक था।"

मनोरमाका मुँह पीला हो गया। दुखी होकर बोली—"क्या कहता था ? यह तो बुरे ढंगसे पीछे पड़ा है। चार दिन भी सब्र नहीं करता।"

अिन्द्रनाथ—"कहता है, अब तो नालिश ही करनी पड़ेगी!"

मनोरमा—"कितना किराया है ? तीन महीनेका ?"

जब हमारे पास रुपया नहीं होता तब हम हिसाब नहीं करते। हिसाब करते हुअे हमें डर लगता है। अिन्द्रनाथने मनोरमाकी बातको अनसुना कर दिया और कहा—"जी चाहता है, कोअी नौकरी कर लूँ। अब यह रोज़ रोज़का अपमान नहीं सहा जाता। प्रशंसा करनेको सभी हैं, सहायता करनेको कोअी भी नहीं और खाली प्रशंसासे किसीका पेट कब भरा है ?"

मनोरमाने अपने पतिकी ओर देखा और कहा—"कर देखो! मगर तुम्हारा यह लिखनेका चसका तो न छूटेगा। यह भी दूसरी शराब है।"

अिन्द्रनाथ—"हुआ करे, छोड़ दूँगा। तुमने मुझे अभी समझा ही नहीं।"

मनोरमा—"खूब समझी हूँ। दफ्तरमें काम कर सकोगे ?"

अिन्द्रनाथ—"पैसे मिलेंगे तब क्यों न करूँगा ?"

मनोरमा—"अफ़सरोंकी झिड़कियाँ सह सकोगे ?"

अिन्द्रनाथ—"मकान-मालिकके तगादोंसे तो जान बचेगी।"

मनोरमा—"यदि किसीने कह दिया—'अरे! ये तो वही कविराज हैं जो साहित्य-क्षेत्रमें कितने प्रसिद्ध हैं। हमने समझा था, कोअी बड़ा आदमी होगा, पर यह तो साधारण मुंशी निकला।' तब ?"

अिन्द्रनाथ—"मैं समझूँगा, किसी औरको कहते हैं। अब और क्या करूँ ? प्रकाशकोंने तो मेरे परिश्रमपर डाका मारनेका निश्चय कर लिया है। कहते हैं, जब कोअी ज्यादा न देगा तब झक मारकर हमारी शर्तें स्वीकार करेगा। वे रुपयेवाले है, रुपयेका मूल्य समझते हैं, हलका मूल्य नहीं समझते। अैसे स्वार्थी मुझे क्या दे सकेंगे। यूरोपमें होता तो सोनेका महल खड़ा कर लिया होता। यहाँ अपने भाग्यको रो रहे हैं।"

मनोरमा—"तुम अपना दिल छोटा न करो। सब ठीक हो जायगा।"

अिन्द्रनाथ—"तो आज जाअूँ, लाला रंगीलालसे मिल आअूँ ? मेरा दिल कहता है, काम बन जायगा। बड़े सज्जन हैं!"

मनोरमा—"ज़रा तारीफ़ कर देना। बड़े आदमी दो बातोंसे ही खुश हो जाते है।"

अिन्द्रनाथ—"मुझे अिस तरह पढ़ानेकी ज़रूरत नहीं।"

मनोरमा—"यह काम हो जाय, तो समझें गंगा नहा लिया।"

अिन्द्रनाथ—"अुनका तो बहुत अधिकार है, चाहें तो आज ही नौकरी दे दें। अुठो, कपड़े बदलवा दो। बहुत मैले हो गये हैं।"

मनोरमाने अुठकर संदूक खोला, और कपड़े देखने लगी।

परन्तु कपड़े धुलकर नहीं आये थे। मनोरमाके हृदयपर दूसरा आघात लगा। अुसका मुँह हार्दिक वेदनासे पीला पड़ गया। यह वही प्रसन्न-वदन, वही प्रफुल्ल-हृदय मनोरमा थी, जिसके क़हक़होंसे सारा मुहल्ला गूँजता रहता था; पर अिस समय वह कितनी अशान्त, कैसी अुदास थी? पंछी कभी फूलकी डालियोंपर बैठकर किलोलें करता है, कभी पंख समेटकर चुपचाप अपने घोंसलेमें बैठ जाता है।

अिन्द्रनाथने ठंडी आह भरी, कहा—"मनोरमा! अब नहीं सहा जाता। यह वही प्रतिभा-सम्पन्न, वही सुप्रसिद्ध लेखक है, जिसकी कविता देशके कोने कोनेमें आदर-सम्मानसे पढ़ी जाती है; जिसकी लेखनी, जिसकी रचनाअें पत्थर-दिलोंको भी मोह लेती हैं; जिसकी शब्द-रचनाको लोग तरसते है, जिसका नाम सुनकर लोग श्रद्धा-भावसे गरदन झुका देते हैं, जिसके ग्रंथ दुष्टात्माओंको धर्म-अुपदेशोंसे कम नहीं, आज पचास रुपयेकी नौकरी करने चला है। काव्य, कल्पना और कलाकी नगरीका राजा भीख माँगने निकला है!"

मनोरमाने अपने पतिकी वह हीन दशा देखी, तो आह मारकर पृथ्वीपर बैठ गयी। अिस समय अुसके हृदयमें अेक ही विचार था—"यह सिर किसीके सामने कैसे झुकेगा?"

३

अेक घंटेके बाद अिन्द्रनाथ पे-ऑफ़िसके सुपरिंटेंडेंट लाला रंगीलालके दफ्तरमें थे। लाला रंगीलाल अेक किताब पढ़ रहे थे। अुन्होंने बहुत तपाकके साथ अुठकर अिन्द्रनाथसे हाथ मिलाया, और माफ़ी माँगते हुअे कहा—"मुझे केवल पाँच मिनटकी आज्ञा दीजिये।"

यह कहकर लाला रंगीलालने सामने पड़ी हुअी कुरसीकी तरफ़ अिशारा किया, और अपनी पुस्तक पढ़नेमें लीन हो गये। अिन्द्रनाथको यह व्यवहार अत्यंत लज्जाजनक मालूम हुआ। अुनको अैसा मालूम हुआ, जैसे किसीने खुल्लम-खुल्ला निरादर कर दिया हो। अुनका चेहरा तमतमा अुठा। खयाल आया, कैसा असभ्य है। अिसे अपने समयका ख़याल है, हमारे समयकी परवाह नहीं। और यदि अभीसे यह दशा है तो नौकर हो जानेपर तो शायद द्वारपर प्रतीक्षा करनी होगी! अिन्द्रनाथने अुठनेका संकल्प किया, मगर अेकाअेक मकान-मालिककी अग्नि-मूर्ति याद आ गयी। क्या फिर वही आँखें देखूँगा? क्या फिर वही धौंस सुनूँगा? अिन्द्रनाथ चुपचाप बैठ गये, जैसे हवामें अुड़ते हुअे काग़ज़ोंपर कोअी लोहेका टुकड़ा धर दे। अिन काग़ज़के टुकड़ों-की लोहेके सम्मुख क्या शक्ति है? आत्माको प्रकृतिने दबा लिया। यह प्रतीक्षाका समय अिन्द्रनाथके लिये आत्मिक यन्त्रणाका समय था; और जब लाला रंगीलालने पुस्तक समाप्त कर ली तब अिन्द्र-नाथको अैसा मालूम हुआ, जैसे कमरेमें हवाका अभाव है, और अुनका दम घुटा जा रहा है। मगर रंगीलाल अपनी पढ़ी हुअी पुस्तकके ध्यानमें तन्मय थे। थोड़ी देर तक वे योगकी-सी अवस्था में आँखें बन्द किये पड़े रहे; फिर बड़बड़ाने लगे—"वाह वाह! क्या कहना!! कितने अूँचे विचार हैं, कैसे पवित्र भाव!!!"

अिन्द्रनाथ अुनकी ओर आँखें फाड़कर देखने लगे कि ये कहते क्या है?

रंगीलालने मेज़पर झुककर कहा—"फ़रमाअिये जनाब, क्या हुक्म है?"

अितनेमें कमरेका द्वार खुला, बड़े साहब हाथमें टोप लिये हुअे अन्दर आये। लाला रंगीलाल खड़े हो गये।

"गुड मार्निंग !"

"गुड मार्निंग ! यह पुस्तक कैसी है ?"

रंगीलाल—"बहुत बढ़िया !"

साहबने अेक हाथमें पुस्तक लेकर दूसरे हाथसे अुसके पन्ने अुलटते हुअे कहा—"टो आपको बहोट अचा मालूम हुआ ?"

रंगीलाल—"अच्छाका सवाल नहीं। मैंने अैसी पुस्तक हिन्दीमें आज तक नहीं देखी।"

साहब—"अिटना अच्चा है ?"

रंगीलाल—"पढ़नेपर मज़ा मिल गया।"

साहब—"अिंगलिशमें किस किताबके माफ़िक है ?"

रंगीलाल—"यह मैं नहीं जानता, पर पुस्तक बहुत अच्छी है।"

साहब—ड्रामा है क्या ?"

रंगीलाल—"नहीं साहब, 'पोयट्री' है।"

साहब—"हिन्दीका पोयट्री क्या होगा ! 'रबीश' होगा।"

रंगीलाल—"यदि आप पढ़ सकते तो अैसा कभी न कहते।"

सहसा अिन्द्रनाथकी दृष्टि पुस्तकके कवरकी तरफ़ गयी, तो वे चौंक पड़े। वह पुस्तक 'भाव-सुषमा' थी। अुनका मन-मयूर नाचने लगा। अुनका दिल गुलाबके फूलके समान खिल गया। वे अब अिस दुनियामें न थे; किसी और दुनियामें थे। अुन्हें अब अिस तुच्छ, निकृष्ट, नश्वर दुनियाकी मोहनी माया—दौलत—की परवाह न थी। सोचते थे, दौलत क्या है ? आती है, चली

जाती है। यह अुड़ती-फिरती चिड़िया है, जिसे पिंजड़ेमें बन्द रखना असम्भव है। मेरे पास धन नहीं, धनवान तो है। अिस आदमीके दिलमें मेरा कितना मान है, कैसी भक्ति-भावना है! पुस्तककी ओर अिस तरह देखता है, जैसे कोअी भक्त अपने अुपास्य देवकी ओर देखता हो। पढ़ता था तब आँखें चमकती थीं। मुझे अिस दशामें देखेगा तो क्या कहेगा? चौंक अुठेगा। चकित रह जायगा। अुसे आशा न होगी कि मैं भिखारी बनकर अुसके सामने हाथ पसारूँगा, और मै अुसके सामने आँखें न अुठा सकूँगा। लज्जासे भूमिमें गड़ जाअूँगा। मुझे नौकरी मिल जायगी—पर आत्मगौरवकी दौलत जाती रहेगी यह सौदा महँगा है। लोग आत्मगौरवकी खातिर सर्वस्व लुटा देते हैं। क्या मैं चाँदीके कुछ सिक्कोंके लिये अिस अमोल धनसे शून्य रह जाअूँगा? नहीं, यह भूल होगी। मैं यह भूल कभी न करूँगा। यह सोचकर अिन्द्रनाथ धीरेसे अुठे, और दूवार खोलकर बाहर निकल गये।

अिस समय अुनके मुँहपर आध्यात्मिक आभा थी, जो अिस असार संसारमें कम ही दिखाअी देती है। अुनकी आँखोंमें आत्म-सम्मानकी ज्योति जलती थी, दिलमें स्वर्गीय आनन्दका सागर लहरें मारता था। पहले आत्माको प्रकृतिने पछाड़ा था, अब प्रकृतिपर आत्माने विजय पायी। अिन्द्रनाथमें वही संतोष था, वही त्याग, वही संयम, वही वैराग्य, जो संन्यासियोकी संपत्ति है, जिसके लिये योगी जंगलोंमें भटकते फिरते हैं। घर पहुँचे तब अैसे प्रसन्न थे, जैसे कुबेरका धन पा गये हों।

मनोरमा बोली—"मालूम होता है, काम बन गया?"

अिन्द्रनाथ—"आशासे भी अधिक।"

मनोरमा—"परमात्माको धन्यवाद है कि अुसने हमारी सुन ली। क्या महीना तय हुआ?"

अिन्द्रनाथ—"कुछ न पूछो! अिस समय मेरा दिल वसमें नहीं है।"

मनोरमा—"अरे! तो क्या मुझे भी न बताओगे?"

अिन्द्रनाथने मनोरमाको सारी कहानी सुना दी, और अन्तमें कहा—"मनोरमा, मुझे नौकरी नहीं मिली, पर आत्म-ज्ञान मिल गया है। मेरे ज्ञान-चक्षु खुल गये हैं। मैं अपने आपको भूला हुआ था, आज मेरे हृदय-पटसे पर्दा अुठ गया है। मुझे मालूम हो गया है, कविकी पदवी कितनी महान्, कैसी अुच्च है! वह दिलोंके सिंहासनपर राज्य करती है, वह सोती हुअी जातिको जगाती है, वह मरे हुअे देशमें नव-जीवनका संचार करती है। दुनिया अपने लिये जीती है और मरती है, मगर कविका सारा जीवन अुपकारका जीवन है। वह गिरे हुअे अुत्साहको अुठाता है, रोती हुअी आँखोंके आँसू पोंछता है, और निराशावादियोंके सामने आशाका दिव्य दीपक रोशन करता है। दुनियाके लोग अुत्पन्न होते हैं और मर जाते हैं, पर अैसे जाति-निर्माता सदा ज़िन्दा रहते हैं, अुन्हें कभी मौत नहीं आती। मैंने नौकरी नहीं ली, यह अमर जीवन ले लिया है। मनोरमा! मेरी सहायता करो। अिसमें सन्देह नहीं, तुम्हें कष्ट होगा, पर अिसके बदलेमें जो आत्मिक आनंद, जो सच्चा सुख प्राप्त होगा, अुसका मोल कौन समझ सकता है?"

शरणागत

रज्जब अपना रोज़गार करके ललितपुर लौट रहा था, साथमें स्त्री थी, और गाँठमें दो-तीन सौकी बड़ी रक़म। मार्ग बीहड़ था, और सुनसान। ललितपुर काफ़ी दूर था, बसेरा कहीं-न-कहीं लेना ही था, अिसलिये अुसने मडपुरा नामक गाँवमें ठहर जानेका निश्चय किया। अुसकी पत्नीको बुखार हो आया था, रक़म पासमें थी और बैलगाड़ी किरायेपर करनेमें खर्च ज्यादा पड़ता, अिसलिये रज्जबने अुस रात आराम कर लेना ही ठीक समझा।

परन्तु ठहरता कहाँ? ज़ात छिपानेसे काम नहीं चल सकता था। अुसकी पत्नी नाक और कानोंमें चाँदीकी बालियाँ डाले थी, और पाजामा पहने थी। अिसके सिवा गाँवके बहुत-से लोग अुसको पहचानते भी थे। वह अुस गाँवके बहुत-से कर्मण्य और अकर्मण्य ढोर खरीदकर ले जा चुका था।

अपने व्यवहारियोंसे अुसने रात-भरके बसेरेके लायक़ स्थानकी याचना की। किसीने भी मंजूर न किया। अुन लोगोंने अपने ढोर रज्जबको अलग अलग और लुके-छिपे बेचे थे। ठहरानेमें तुरन्त ही तरह तरहकी खबरें फैलतीं, अिसलिये सबोंने अिनकार कर दिया।

गाँवमें अेक ग़रीब ठाकुर रहता था। थोड़ी-सी ज़मीन थी, जिसको किसान जोते हुअे थे। निजका हल-बैल कुछ भी न था। लेकिन अपने किसानोंसे दो-तीन सालका पेशगी लगान वसूल कर लेनेमें ठाकुरको किसी विशेष बाधाका सामना नहीं करना पड़ता

था। छोटा-सा मकान था, परंतु अुसको गाँववाले 'गढ़ी' के आदर-व्यंजक शब्दसे पुकारा करते थे, और ठाकुरको डरके मारे 'राजा' शब्दसे सम्बोधन करते थे।

शामतका मारा रज्जब अिसी ठाकुरके दरवाज़ेपर अपनी ज्वर-ग्रस्त पत्नीको लेकर पहुँचा।

ठाकुर पौरमें बैठा हुक्का पी रहा था। रज्जबने बाहरसे ही सलाम करके कहा—"दाअूजू अेक बिनती है।"

ठाकुरने बिना रत्ती-भर अिधर-अुधर हिले-डुले पूछा—"क्या?"

रज्जब बोला—"मै दूरसे आ रहा हूँ। बहुत थका हुआ हूँ। मेरी औरतको ज़ोरसे बुख़ार आ गया है। जाड़ेमें बाहर रहनेसे न जाने अिसकी क्या हालत हो जायगी। अिसलिये रात-भरके लिये कहीं दो हाथ जगह दे दी जाय।"

"कौन लोग हो?" ठाकुरने प्रश्न किया।

"हूँ तो कसाअी!" रज्जबने सीधा अुत्तर दिया। चेहरेपर अुसके बहुत गिड़गिड़ाहट थी।

ठाकुरकी बड़ी आँखोंमें कठोरता छा गयी। बोला—"जानता है, यह किसका घर है। यहाँ तक आनेकी हिम्मत कैसे की तूने?"

रज्जबने आशा-भरे स्वरमें कहा—"यह राजाका घर है। अिसीलिये शरणमें आया हूँ।"

तुरन्त ठाकुरकी आँखोंकी कठोरता गायब हो गयी। ज़रा नरम स्वरमें बोला—"किसीने तुमको बसेरा नहीं दिया?"

"नहीं महाराज!" रज्जबने अुत्तर दिया—"बहुत कोशिश की, परन्तु मेरे खोटे पेशेके कारण कोअी सीधा नहीं हुआ।" और, वह दरवाज़ेके बाहर ही, अेक कोनेसे चिपटकर बैठ गया। पीछे

अुसकी पत्नी कराहती, काँपती हुअी गठरी-सी बनकर सिमट गयी।

ठाकुरने कहा—"तुम अपनी चिलम लिये हो ?"

"हाँ, सरकार!" रज्जबने अुत्तर दिया।

ठाकुर बोला—"तब भितर आ जाओ, और तमाखु अपनी चिलमसे पी लो। अपनी औरतको भी भीतर कर लो। हमारी पौरके अेक कोनेमें पड़ रहना।"

जब वे दोनों भीतर आ गये, ठाकुरने पूछा—"तुम कब यहाँ से अुठकर चले जाओगे ?" जवाब मिला—"अँधेरेमें ही महाराज! खानेके लिये रोटियाँ बाँधे हूँ, अिसालिये पकानेकी ज़रूरत न पड़ेगी।"

"तुम्हारा नाम ?"

"रज्जब।"

२

थोड़ी देर बाद ठाकुरने रज्जबसे पूछा—"कहाँ से आ रहे हो ?"

रज्जबने स्थानका नाम बतलाया।

"वहाँ किसलिये गये थे ?"

"अपने रोज़गारके लिये।"

"काम तो तुम्हारा बहुत बुरा है।"

"क्या करूं, पेटके लिये करना ही पड़ता है। परमात्माने जिसके लिये जो रोजगार मुकर्रर किया है, वही अुसको करना पड़ता है।"

"क्या नफ़ा हुआ ?" प्रश्न करनेमें ठाकुरको ज़रा संकोच हुआ, और प्रश्नका अुत्तर देनेमें रज्जबको अुससे बढ़कर।

रज्जबने जवाब दिया—"महाराज, पेटके लायक कुछ मिल गया है। यों ही।" ठाकुरने असपर कोअी जिद नहीं की।

रज्जब अेक क्षण बाद बोला—"बड़े भोर अुठकर चला जाअूँगा। तब तक घरके लोगोंकी तबीयत भी अच्छी हो जायगी।"

अिसके बाद दिन-भरके थके हुअे पति-पत्नी सो गये। काफ़ी रात गये, कुछ लोगोंने अेक बँधे अिशारेसे ठाकुरको बाहर बुलाया। अेक फटी-सी रज़ाअी ओढ़े ठाकुर बाहर निकल आया।

आगंतुकोंमेंसे अेकने धीरेसे कहा—"दाअूजू, आज तो खाली हाथ लौटे हैं। कल संध्याका सगुन बैठा है।"

ठाकुरने कहा—"आज ज़रूरत थी। खैर, कल देखा जायगा क्या कोअी अुपाय किया था?"

"हाँ," आगंतुक बोला—"अेक क़साअी रुपयेकी मोट बाँधे अिसी ओर आया है। परन्तु हमलोग ज़रा देरमें पहुँचे। वह खिसक गया। कल देखेंगे ज़रा जल्दी।"

ठाकुरने घृणा-सूचक स्वरमें कहा—"क़साअीका पैसा न छूअेंगे।"

"क्यों?"

"बुरी कमाअी है।"

"अुसके रुपयोंपर क़साअी थोड़े ही लिखा है?"

"परन्तु अुसके व्यवसायसे वह रुपया दूषित हो गया है।"

"रुपया तो दूसरोंका ही है। क़साअीके हाथमें आनेसे रुपया क़साअी नहीं हुआ।"

"मेरा मन नहीं मानता, वह अशुद्ध है।"

"हम अपनी तलवारसे अुसको शुद्ध कर लेंगे।"

ज्यादा बहस नहीं हुआी। ठाकुरने कुछ सोचकर अपने साथियोंको बाहर-का-बाहर ही टाल दिया।

भीतर देखा, क़साआी सो रहा था, और अुसकी पत्नी भी। ठाकुर भी सो गया।

३

सबेरा हो गया, परन्तु रज्जब न जा सका। अुसकी पत्नीका बुखार तो हलका हो गया था, परन्तु शरीर-भरमें पीड़ा थी, और वह अेक क़दम भी नहीं चल सकती थी।

ठाकुर अुसे वहीं ठहरा हुआ देखकर कुपित हो गया। रज्जबसे बोला—"मैंने खूब मेहमान अिकट्ठे किये हैं। गाँव-भर थोड़ी देरमें तुमलोगोंको मेरी पौरमें टिका हुआ देखकर तरह तरह-की बकवास करेगा। तुम बाहर जाओ। अिसी समय!"

रज्जबने बहुत विनती की, परन्तु ठाकुर न माना। यद्यपि गाँव-भर अुसके दबदबेको मानता था, परन्तु अव्यक्त लोकमतका दबदबा अुसके भी मनपर था। अिसलिये रज्जब गाँवके बाहर सपत्नीक अेक पेड़के नीचे जा बैठा, और हिन्दूमात्रको मन-ही-मन कोसने लगा।

अुसे आशा थी कि पहर-आध पहरमें अुसकी पत्नीकी तबीयत अितनी स्वस्थ हो जायगी कि वह पैदल यात्रा कर सकेगी। परन्तु अैसा न हुआ, तब अुसने अेक गाड़ी किरायेपर कर लेनेका निर्णय किया।

मुश्किलसे अेक चमार काफ़ी किराया लेकर ललितपुर गाड़ी ले जानेके लिये राज़ी हुआ। अितनेमें दोपहर हो गयी। अुसकी पत्नीको ज़ोरका बुख़ार हो आया। वह जाड़ेके मारे थर थर काँप

रही थी, अितनी कि रज्जबकी हिम्मत अुसी समय ले जानेकी न पड़ी। गाड़ीमें अधिक हवा लगनेके भयसे रज्जबने अुस समय तकके लिये यात्राको स्थगित कर दिया, जब तक कि अुस बेचारी की कम-से-कम कँपकँपी बन्द न हो जाय।

घंटे डेढ़-घंटे बाद अुसकी कँपकँपी बन्द हो गयी, परन्तु ज्वर बहुत तेज़ हो गया। रज्जबने अपनी पत्नीको गाड़ीमें डाल दिया, और गाड़ीवानसे जल्दी चलनेको कहा।

गाड़ीवान बोला—"दिन-भर तो यहीं लगा दिया। अब जल्दी चलनेको कहते हो!"

रज्जबने मिठासके स्वरमें अुससे फिर जल्दी करनेके लिये कहा। वह बोला—"अितने किरायेमें काम नहीं चल सकेगा। अपना रुपया वापस लो। मैं तो घर जाता हूँ।"

रज्जबने दाँत पीसे। कुछ क्षण चुप रहा। सचेत होकर कहने लगा—"भाअी, आफ़त सबके अूपर आती है। मनुष्य मनुष्यको सहारा देता है, जानवर तो देते नहीं। तुम्हारे भी बाल-बच्चे हैं। कुछ दयाके साथ काम लो।"

कसाअीको दयापर व्याख्यान देते सुनकर गाड़ीवानको हँसी आ गयी।

अुसको टस-से-मस न होता देखकर रज्जबने और पैसे दिये। तब अुसने गाड़ी हाँकी।

४

पाँच छह मील चलनेके बाद संध्या हो गयी। गाँव कोअी पासमें न था। रज्जबकी गाड़ी धीरे धीरे चली जा रही थी। अुसकी

पत्नी बुखारमें बेहोश-सी थी। रज्जबने अपनी कमर टटोली। रक़म सुरक्षित बँधी पड़ी थी।

रज्जबको स्मरण हो आया कि पत्नीके बुखारके कारण अंटीका कुछ बोझ कम कर देना पड़ा है—और स्मरण हो आया गाड़ीवान-का वह हठ, जिसके कारण अुसको कुछ पैसे व्यर्थ ही और दे देने पड़े थे। अिससे गाड़ीवानपर क्रोध था; परन्तु अुसको प्रकट करनेकी अुस समय अुसके मनमें अिच्छा न थी।

बातचीत करके रास्ता काटनेकी कामनासे अुसने वार्तालाप आरम्भ किया—

"गाँव तो यहाँसे दूर मिलेगा।"

"बहुत दूर वहीं ठहरेंगे।"

"किसके यहाँ?"

"किसीके यहाँ भी नहीं। पेड़के नीचे। कल सबेरे ललित-पुर चलेंगे।"

"कलका फिर पैसा माँग अुठना।"

"कैसे माँग अुठूँगा? किराया ले चुका हूँ। अब फिर कैसे माँगूगा?"

"जैसे आज गाँवमें हठ करके माँगा था। बेटा, ललितपुर होता तो बतला देता।"

"क्या बतला देते? क्या सेंत-मेंत गाड़ीमें बैठना चाहते थे?"

क्यों बे, क्या रुपये देकर भी सेंत-मेंतका बैठना कहलाता है?"

जानता है, मेरा नाम रज्जब है? अगर बीचमें गड़बड़ करेगा तो सालेको यहीं छुरेसे काटकर कहीं फेंक दूँगा, और गाड़ी लेकर ललितपुर चल दूँगा।"

रज्जब क्रोधको प्रकट नहीं करना चाहता था, परंतु

शायद अकारण ही वह भली भाँति प्रकट हो गया।

गाड़ीवानने अिधर-अुधर देखा, अँधेरा हो गया था। चारों ओर सुनसान था। आस-पास झाड़ी खड़ी थी। अैसा जान पड़ता था, कहींसे कोअी अब निकला, अब निकला। रज्जबकी बात सुनकर अुसकी हड्डी काँप गयी। अैसा जान पड़ा, मानों पसलियोंको अुसकी ठंडी छुरी छू रही हो।

गाड़ीवान चुपचाप बैलोंको हाँकने लगा। अुसने सोचा—"गाँवके आते ही गाड़ी छोड़कर नीचे खड़ा हो जाअूँगा, और हल्ला-गुल्ला करके गाँववालोंकी मददसे अपना पीछा रज़्जबसे छुड़ाअूँगा। रुपये-पैसे भले ही वापस कर दूँगा, परंतु और आगे न जाअूँगा। कहीं सचमुच मार्गमें मार डाले!"

५

गाड़ी थोड़ी दूर और चली होगी कि बैल ठिठककर खड़े हो गये। रज्जब सामने न देख रहा था, अिसलिये ज़रा कड़ककर गाड़ीवानसे बोला—"क्यों बे बदमाश, सो गया क्या?"

अधिक कड़कके साथ सामने रास्तेपर खड़ी हुअी अेक टुकड़ीमेंसे किसीके कठोर कंठसे निकला—"खबरदार, जो आगे बढ़ा!"

रज्जबने सामने देखा कि चार-पाँच आदमी बड़े बड़े लठ बाँधकर न जाने कहाँसे आ गये हैं। अुनमें तुरंत ही अेकने बैलोंकी जुआरीपर अेक लठ पटका और दो दायें-बायें आकर रज्जबपर आक्रमण करनेको तैयार हो गये।

गाड़ीवान गाड़ी छोड़कर नीचे ज़ा खड़ा हुआ। बोला—"मालिक, मैं तो गाड़ीवान हूँ। मुझसे कोअी सरोकार नहीं।"

"यह कौन है?" अेकने गरजकर पूछा।

गाड़ीवानकी घिग्घी बँध गयी। कोअी अुत्तर न दे सका।

रज्जबने कमरकी गाँठको अेक हाथसे सँभालते हुअे बहुत ही विनम्र स्वरमें कहा—"मैं बहुत ग़रीब आदमी हूँ। मेरे पास कुछ नहीं है। मेरी औरत गाड़ीमें बीमार पड़ी है। मुझे जाने दीजिये।"

अुन लोगोंमेंसे अेकने रज्जबके सिरपर लाठी अुबारी। गाड़ीवान खिसकना चाहता था कि दूसरेने अुसको पकड़ लिया।

अब अुसका मुँह खुला। बोला—"महाराज, मुझको छोड़ दो। मैं तो किरायेसे गाडी लिये जा रहा हूँ। गाँठमें खानेके लिये तीन-चार आने पैसे ही हैं।"

"और यह कौन है? बतला!" अुन लोगोंमेंसे अेकने पूछा।

गाड़ीवानने तुरन्त अुत्तर दिया—"ललितपुरका अेक क़साअी।"

रज्जबके सिरपर जो लाठी अुबारी गयी थी, वह वहीं रह गयी। लाठीवालेके मुँहसे निकला—"तुम क़साअी हो? सच बतलाओ।"

"हाँ, महाराज!" रज्जबने सहसा अुत्तर दिया—"मैं बहुत ग़रीब हूँ। हाथ जोड़ता हूँ, मुझको मत सताओ। मेरी औरत बहुत बीमार है।"

औरत ज़ोरसे कराही।

लाठीवाले अुस आदमीने अेक साथीसे कानमें कहा—"अिसका नाम रज्जब है। छोड़ो, चलें यहाँसे।"

अुसने न माना; बोला—"अिसका खोपड़ा चकनाचूर करो दाअूजू! यदि वैसे न माने तो क़साअी-असाअी हम कुछ नहीं मानते।"

"छोड़ना ही पड़ेगा।" अुसने कहा—"अिसपर हाथ नहीं अुठाअेंगे और न अिसका पैसा छूअेंगे।"

दूसरा बोला—"क्या क़साओी होनेके डरसे ? दाऊजू, आज तुम्हारी बुद्धि पर पत्थर पड़ गये हैं, मै देखता हूँ ।" और वह तुरन्त लाठी लेकर गाड़ीमें चढ़ गया। लाठीका अेक सिरा रज्जबकी छातीमें अड़ाकर अुसने तुरन्त रुपया-पैसा निकालकर दे देनेका हुक्म दिया। नीचे खड़े हुअे अुस व्यक्तिने ज़रा तीव्र स्वरमें कहा—"नीचे अुतर आओ। अुससे मत बोलो। अुसकी औरत बीमार है।"

"हो, मेरी बलासे," गाड़ीमें चढ़े हुअे लठैतने अुत्तर दिया—"मैं क़साअियोंकी दवा हूँ।" और अुसने रज्जबको फिर धमकी दी।

नीचे खड़े हुअे अुस व्यक्तिने कहा—"खबरदार, जो अुसे छूआ। नीचे अुतरो, नहीं तो तुम्हारा सिर चूर किये देता हूँ। वह मेरी शरण आया था।"

गाड़ीवान लठैत झक-सी मारकर नीचे अुतर आया।

नीचेवाले व्यक्तिने कहा—"सब लोग अपने अपने घर जाओ। राहगीरोंको तंग मत करो।" फिर गाड़ीवानसे बोला—"जा रे हाँक ले गाड़ी। ठिकाने तक पहुँचा आना, तब लौटना; नहीं तो अपनी खैर मत समझियो। और, तुम दोनोंमे से किसीने भी कभी अिस बातकी चर्चा कहीं की, तो भूसीकी आगमें जलाकर खाक कर दूँगा।"

गाड़ीवान गाड़ी लेकर बढ़ गया। अुन लोगोंमेंसे जिस आदमीने गाड़ीपर चढ़कर रज्जबके सिरपर लाठी तानी थी, अुसने क्षुब्ध स्वरमें कहा—"दाऊजू, आगेसे कभी आपके साथ न आअूँगा।"

दाऊजूने कहा—"न आना। मैं अकेला ही बहुत कर गुज़रता हूँ। 'परन्तु बुन्देला शरणागतके साथ घात नहीं करता,' अिस बातको गाँठ बाँध लेना।"

मधुआ

"आज सात दिन हो गये, पीनेकी कौन कहे, छुआ तक नहीं ! आज सातवाँ दिन है सरकार !"

"तुम झुठे हो । अभी तो तुम्हारे कपड़ेसे महँक आ रही है ।"

"वह....वह तो कअी दिन हुअे । सात दिन अूपर कअी दिन हुअे—अँधेरेमें बोतल अुँडेलने लगा था ! कपड़ेपर गिर जानेसे नशा भी न आया । और आपको कहनेसे का........क्या कहूँ.... सच मानिये । सात दिन—ठीक सात दिनसे अेक बूँद भी नहीं ।"

ठाकुर सरदारसिंह हँसने लगे । लखनअूमें लड़का पढ़ता था । ठाकुर साहब भी कभी कभी वहीं आ जाते । अुनको कहानी सुननेका चसका था । खोजनेपर यही शराबी मिला । यह रातको दोपहरमें, कभी कभी सबेरे भी आ जाता । अपनी लच्छेदार कहानी सुनाकर ठाकुरका मनोविनोद करता ।

ठाकुरने हँसते हुअे कहा—"तो आज पीओगे न ?"

"झूठ कैसे कहूँ ? आज तो जितना मिलेगा, सबकी पीअूँगा । सात दिन चने-चबेनेपर बिताये हैं, किसलिये ?"

"अद्भुत ! सात दिन पेट काटकर, आज अच्छा भोजन न करके तुम्हे पीनेकी सूझी है ! यह भी...."

"सरकार ! मौज-बहारकी अेक घड़ी, अेक लम्बे दुःख-पूर्ण जीवनसे अच्छी है । अुसकी खुमारी मे रूखे दिन काट लिये जा सकते हैं ।"

" अच्छा, आज दिन-भर तुमने क्या क्या किया है ?"

"मैंने ? अच्छा, सुनिये — सबेरे कुहरा पड़ता था। मेरे धुआँसे कम्बल-सा वह भी सूर्यके चारों ओर लिपटा था। हम दोनों मुँह छिपाये पड़े थे।"

ठाकुर साहबने हँसकर कहा—"अच्छा, तो अिस मुँहको छिपानेका कोअी कारण ?"

"सात दिनसे अेक बूँद भी गले न अुतरी थी। भला, मैं कैसे मुँह दिखा सकता था ? और जब बारह बजे धूप निकली, तो फिर लाचारी थी। अुठा, हाथ-मुँह धोनेमें जो दुःख हुआ सरकार, वह क्या कहनेकी बात है ? पासमें पैसे बचे थे। चना चबानेसे दाँत भाग रहे थे। कटकटी लग रही थी। पराठेवालेके यहाँ पहुँचा, धीरे धीरे खाता रहा और अपनेको सेंकता भी रहा। फिर गोमती किनारे चला गया। घूमते घूमते अन्धेरा हो गया, बूँदें पड़ने लगीं। तब कहीं भागा और आपके पास आया।"

"अच्छा, जो अुस दिन तुमने गड़रियेवाली कहानी सुनायी थी, जिसमें आसफुद्दौलाने अुसकी लड़कीका आँचल, भुने हुअे भुट्टेके दानोंके बदले, मोतियोंसे भर दिया था! वह क्या सच है ?"

"सच ! अरे वह ग़रीब लड़की भूखसे अुसे चबाकर थू थू करने लगी !....रोने लगी। अैसी निर्दय दिल्लगी बड़े लोग कर ही बैठते हैं। सुना है, श्रीरामचद्रने भी हनुमानजीसे अैसी ही...."

ठाकुर साहब ठठाकर हँसने लगे। पेट पकड़कर हँसते हँसते लेट गये। साँस बटोरते हुअे सम्हालकर बोले—"और बड़प्पन कहते किसे हैं ? कंगाल तो कंगाल ! गधी लड़की ! भला, अुसने कभी मोती देखे थे ? चबाने लगी होगी। मैं सच कहता हूँ, आज तक तुमने

जितनी कहानियाँ सुनायीं, सबमें बड़ी टीस थी। शाहज़ादोंके दुखड़े, रंगमहलकी अभागिनी बेग़मोंके निष्फल प्रेम, करुण-कथा और पीड़ासे भरी हुअी कहानियाँ ही तुम्हें आती हैं; पर ऐसी हँसानेवाली कहानी और सुनाओ, तो मैं तुम्हें अपने सामने ही बढ़िया शराब पिला सकता हूँ।"

"सरकार! बूढ़ोंसे सुने हुअे वे नवाबीके सोने-से दिन! अमीरोंकी रँग-रेलियाँ! दुखियोंकी दर्द-भरी आहें! रंग-महलोंमें घुल-घुलकर मरनेवाली बेगमें! अपने-आप सिरमें चक्कर काटती रहती हैं। बड़े बड़े घमण्ड चूर होकर धूलमें मिल जाते हैं। तब भी दुनिया बड़ी पागल है। मैं अुसको—पागलपनको—भूलनेके लिये शराब पीने लगता हूँ—सरकार! नहीं तो यह बुरी बला कौन अपने गले लगाता?"

ठाकुर साहब अूँघने लगे थे। अँगीठीमें कोयला दहक रहा था। शराबी सरदीसे ठिठुरा जा रहा था। वह हाथ सेंकने लगा। सहसा नींदसे चौंककर ठाकुर साहबने कहा—

"अच्छा जाओ, मुझे नींद लग रही है। वह देखो, अेक रुपया पड़ा है, अुठा लो। लल्लूको भेजते जाओ।"

शराबी रुपया अुठाकर धीरेसे खिसका। लल्लू था ठाकुर साहबका जमादार। अुसे खोजते हुअे जब वह फाटकपरकी बगल-वाली कोठरीके पास पहुँचा, तो अुसे सुकुमार कंठसे सिसकनेका शब्द सुनाअी पड़ा। वह खड़ा होकर सुनने लगा—

"तो सूअर! रोता क्यों है? कुँअर साहबने दो ही लात न लगायी है! कुछ गोली तो नहीं मार दी?" कर्कश स्वरसे लल्लू बोल रहा था; किन्तु अुत्तरमें सिसकियोंके साथ अेकाध हिचकी

भी सुनाओी पड़ जाती। अब और भी कठोरतासे लल्लूने कहा—
"मधुआ! जा सो रह। नखरा न कर। नहीं तो अुठूँगा तो खाल अुधेड़ दूँगा! समझा न?"

शराबी चुपचाप सुन रहा था। बालककी सिसकी और बढ़ने लगी। फिर अुसे सुनाओी पड़ा—"ले, अब भागता है कि नहीं! क्यों? मार खानेपर तुला है?"

भयभीत बालक बाहर चला आ रहा था। शराबीने अुसके छोटे-से सुन्दर गोरे मुँहको देखा। आँसूकी बूँदे ढुलक रही थीं। बड़े दुलारसे अुसका मुँह पोछते हुअे अुसे लेकर वह फाटकके बाहर चला आया। दस बज रहे थे। कड़ाकेकी सरदी थी। दोनों चुप-चाप चलने लगे। शराबीकी मौन सहानुभूतिको अुस छोटे-से सरल हृदयने स्वीकार कर लिया। वह चुप हो गया। अभी वह अेक तंग गलीपर रुका ही था कि बालकके फिरसे सिसकनेकी अुसे आहट लगी। वह झिड़ककर बोल अुठा—

"अब क्या रोता है रे छोकरे?"

"मैंने दिन भर कुछ खाया नहीं!"

"कुछ खाया नहीं? अितने बड़े अमीरके यहाँ रहता है और दिन-भर तुझे खानेको नहीं मिला?"

"यही तो मैं कहने गया था जमादारके पास। मार तो रोज़ ही खाता हूँ। आज तो खाना ही नहीं मिला। कुँवर साहबका ओवर-कोट लिये खेलमें दिन-भर साथ रहा। सात बजे लौटा तो और भी नौ बजे तक कुछ काम करना पड़ा। आग रख नहीं सका था। रोटी बनती तो कैसे। जमादारसे कहने गया था—"

भूखकी बात कहते कहते बालकके अूपर अुसकी दीनता और

भूखने अेक साथ ही जैसे आक्रमण कर दिया। वह फिर हिचकियाँ लेने लगा।

शराबी अुसका हाथ पकड़कर घसीटता हुआ गलीमें ले चला। अेक गन्दी कोठरीका दरवाजा ढकेलकर बालकको लिये हुअे वह भीतर पहुँचा। टटोलते हुअे, सलाअीसे मिट्टीकी ढिबरी जलाकर वह फटे कम्बलके नीचेसे कुछ खोजने लगा। अेक पराठेका टुकड़ा मिला। शराबी अुसे बालकके हाथमें देकर बोला—"तब तक तू अिसे चबा; मैं तेरा गढ़ा भरनेके लिये कुछ और ले आअूँ—सुनता है रे छोकरे! रोना मत। रोयेगा तो खूब पीटूँगा। मुझसे रोनेसे बड़ा वैर है। पाजी कहींका, मुझे रुलाने...."

शराबी गलीके बाहर भागा। अुसके हाथमें अेक रुपया था। "बारह आनेका अेक देशी अद्धा और दो आनेका चाप....दो आनेकी पकौड़ी....नहीं नहीं, आलू-मटर....अच्छा, न सही। चारों आनेका मांस ही ले लूँगा। पर यह छोकरा! अिसका गढ़ा जो भरना होगा, यह कितना खायगा और क्या खायगा! ओह! आज तक तो कभी मैंने दूसरोंके खानेका सोच किया ही नहीं। तो क्या चलूँ? पहले अेक अद्धा ही ले लूँ?"

अितना सोचते सोचते अुसकी आँखोंपर बिजलीके प्रकाशकी झलक पड़ी। अुसने अपनेको मिठाअीकी दूकानपर खड़ा पाया। वह शराबका अद्धा लेना भूलकर मिठाअी-पूरी खरीदने लगा। नमकीन लेना भी न भूला। पूरे अेक रुपयेका सामान लेकर वह दूकानसे हटा। जल्द पहुँचनेके लिये अेक तरहसे दौड़ने लगा। अपनी कोठरीमें पहुँचकर अुसने दोनोंकी पाँत बालकके सामने सजा दी। अुनकी सुगन्धसे बालकके गलेमें अेक तरहकी तरावट

पहुँची। वह मुस्कराने लगा।

शराबीने मिट्टीकी गगरीसे पानी अुँड़ेलते हुअे कहा—"नटखट कहींका, हँसता है। सोंधी बास नाकमें पहुँची न। ले, खूब ठूँसकर खा ले। और रोया कि पिटा!"

दोनोंने, बहुत दिनपर मिलनेवाले दो मित्रोंकी तरह साथ बैठकर भर-पेट खाया। सीली जगहमें सोते हुअे बालकने शराबीका पुराना बड़ा कोट ओढ़ लिया था। जब अुसे नींद आ गयी, तो शराबी भी कम्बल तानकर बड़बड़ाने लगा—"सोचा था, आज सात दिनपर भर-पेट पीकर सोअूँगा, लेकिन यह छोटा-सा रोना पाजी, न जाने कहाँसे आ धमका!"

अेक चिन्तापूर्ण आलोकमें आज पहले-पहल शराबीने आँख खोलकर, कोठरीमें बिखरी हुअी दारिद्र्यकी विभूतिको देखा; और देखा अुस घुटनोंसे ठुड्डी लगाये हुअे निरीह बालकको। अुसने तिलमिलाकर मन-ही-मन प्रश्न किया—"किसने अैसे सुकुमार फूलोंको कष्ट देनेके लिये निर्दयताकी सृष्टि की? आह री नियति! तब अिसको लेकर मुझे घरबारी बनना पड़ेगा क्या? दुर्भाग्य! जिसे मैंने कभी सोचा भी न था। मेरी अितनी माया-ममता, जिसपर आज तक केवल बोतलका ही पूरा अधिकार था, अिसका पक्ष क्यों लेने लगी? अिस छोटे-से पाजीने मेरे जीवनके लिये कौन-सा अिन्द्रजाल रचनेका बीड़ा अुठाया है! तब क्या करूँ? कोअी काम करूँ? कैसे दोनोंका पेट चलेगा? नहीं, भगा दूँगा अिसे—आँख तो खोले!"

बालक अँगड़ाअी ले रहा था। शराबी अुठ बैठा अुसने कहा—"ले अुठ, कुछ खा ले। अभी रातका बचा हुआ है और अपनी राह

देख। तेरा नाम क्या है रे ?"

बालकने मीठी हँसी हँसकर कहा—"मधुआ। भला, हाथ-मुँह भी न धोअूँ ? खाने लगूँ ? और जाअूँगा कहाँ ?"

"आह ! कहाँ बताअूँ अिसे कि चला जाय ? कह दूँ कि भाड़में जा; किन्तु यह आज तक दुःखकी भट्टीमें जलता ही तो रहा है। तो...." वह चुपचाप घरसे झल्लाकर सोचता हुआ निकला—"ले पाजी, अब यहाँ लौटूँगा ही नहीं। तू ही अिस कोठरीमें रह।"

शराबी घरसे निकला। गोमती किनारे पहुँचनेपर अुसे स्मरण हुआ कि वह कितनी ही बातें सोचता आ रहा था; पर कुछ भी सोच न सका। हाथ-मुँह धोनेमें लगा। अुजली धूप निकल आयी थी। वह चुपचाप गोमतीकी धाराको देख रहा था। धूपकी गरमीसे सुखी होकर वह चिन्ता भुलानेका प्रयत्न कर रहा था, कि किसीने पुकारा—

"भले आदमी, रहे कहाँ ? सालोंपर दिखाअी पड़े। तुमको खोजते खोजते मैं थक गया।"

शराबीने चौंककर देखा। यह कोअी जान-पहचानका तो मालूम होता था; पर कौन है, यह ठीक ठीक न जान सका।

अुसने फिर कहा—"तुम्हींसे कह रहा हूँ। सुनते हो ? अुठा ले जाओ अपनी सान धरनेकी कल; नहीं तो सड़कपर फेंक दूँगा। अेक ही तो कोठरी, जिसका मैं दो रुपये किराया देता हूँ। अुसमें क्या मुझे अपना कुछ रखनेके लिये नहीं है ?"

"ओहो ! रामजी, तुम हो ? भाअी, मैं भूल गया था। तो चलो, आज ही अुसे अुठा लाता हूँ।" कहते हुअे शराबीने सोचा—"अच्छी रही, अुसीको बेचकर कुछ दिनों तक काम चलेगा।"

गोमती नहाकर रामजी, अुसका साथी, पास ही अपने घरपर पहुँचा। शराबीको कल देते हुअे अुसने कहा—"ले जाओ, किसी तरह मेरा अिससे पिण्ड छूटा।"

बहुत दिनोंपर आज अुसको कल ढोना पड़ा। किसी तरह अपनी कोठरीमें पहुँचकर अुसने देखा कि बालक चुपचाप बैठा है। बड़बड़ाते हुअे अुसने पूछा—"क्यों रे, तूने कुछ खा लिया कि नहीं?"

"भर-पेट खा चुका हूँ; और वह देखो, तुम्हारे लिये भी रख दिया है।" कहकर अुसने अपनी स्वाभाविक मधुर हँसीसे अुस कोठरीको तर कर दिया। शराबी अेक क्षण-भर चुप रहा। फिर चुपचाप जलपान करने लगा। मन-ही-मन सोच रहा था—"यह भाग्यका संकेत नहीं तो और क्या है? चलूँ, फिर कल लेकर सान देनेका काम चलता करूँ। दोनोंका पेट भरेगा। वही पुराना चरखा फिर सिर पड़ा। नहीं तो, दो बातें, किस्सा-कहानी अिधर-अुधरकी कहकर, अपना काम चला ही लेता था। पर अब तो बिना कुछ किये चरखा नहीं चलनेका।" जल पीकर बोला—"क्यों मधुआ! अब तू कहाँ जायगा?"

"कहीं नहीं।"

"यह लो, तो फिर क्या यहाँ जमा गड़ी है कि मैं खोद-कर तुझे मिठाअी खिलाता रहूँगा?"

"तब कोअी काम करना चाहिये।"

"करेगा?"

"जो कहो।"

"अच्छा, तो आजसे मेरे साथ साथ घूमना पड़ेगा। यह कल

तेरे लिये लाया हूँ। चल, आजसे तुझे सान देना सिखाऊँगा। कहाँ रहूँगा, अिसका कुछ ठीक नहीं। पेड़के नीचे रात बिता सकेगा न?"

"कहीं भी रह सकूँगा; पर अुस ठाकुरकी नौकरी न कर सकूँगा!"

शराबीने अेक बार स्थिर दृष्टिसे अुसे देखा। बालककी आँखें दृढ़ निश्चयकी सौगन्ध खा रही थीं।

शराबीने मन-ही-मन कहा—"बैठे-बैठाये यह हत्या कहाँसे लगी? अब तो शराब न पीनेकी भी सौगन्ध लेनी पड़ी।"

वह साथ ले जानेवाली वस्तुओंको बटोरने लगा। अेक गट्ठरका और दूसरा कलका, दो बोझ हुअे।

"शराबीने पूछा—"तू किसे अुठायेगा?"

"जिसे कहो।"

"अच्छा, तेरा बाप जो मुझको पकड़े तो?"

"कोअी नहीं पकड़ेगा, चलो भी। मेरे बाप मर गये।"

शराबी आश्चर्यसे अुसका मुँह देखता हुआ कल अुठाकर खड़ा हो गया। बालकने गठरी लादी। दोनों कोठरी छोड़कर चल पड़े।

आत्माराम

१

बेदों ग्राममें महादेव सोनार अेक सुविख्यात आदमी था। वह अपने सायबानमे प्रातःसे संध्या तक अँगठीके सामने बैठा हुआ खटखट किया करता था। यह लगातार ध्वनि सुननेके लोग अितने अभ्यस्त हो गये थे कि अब किसी कारणसे वह बन्द हो जाती, तो जान पड़ता था कि कोअी चीज़ गायब हो गयी है। वह नित्यप्रति अेक बार प्रातःकाल अपने तोतेका पिंजड़ा लिये कोअी भजन गाता हुआ तालाबकी ओर जाता था। अुस धुँधले प्रकाशमें अुसका जर्जर शरीर, पोपला मुँह और झुकी हुअी कमर देखकर किसी अपरिचित मनुष्यको अुसके पिशाच होनेका भ्रम हो सकता था। ज्योंही लोगोंके कानोंमें आवाज आती— "सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता," लोग समझ जाते कि भोर हो गया।

महादेवका पारिवारिक जीवन सुखमय न था। अुसके तीन पुत्र थे, तीन बहुअें थीं, दर्जनों नाती-पोते थे; लेकिन अुसके बोझको हल्का करनेवाला कोअी न था। लड़के कहते—"जब तक दादा जीते हैं, हम जीवनका आनन्द भोग ले, फिर तो यह ढोल गले पड़ेगा ही।"

बेचारे महादेवको कभी कभी निराहार ही रहना पड़ता। भोजनके समय अुसके घरमें कभी कभी साम्यवादका अैसा गगनभेदी निर्घोष होता कि वह भूखा ही अुठ आता और नारियलका हुक्का पीता हुआ सो जाता। अुसका व्यावसायिक जीवन और भी अशान्ति-कारक था। यद्यपि वह अपने काममें निपुण था, अुसकी खटाअी औरोंसे कहीं ज्यादा शुद्धिकारक और अुसकी

रासायनिक क्रियाअें कहीं ज्यादा कष्टसाध्य थीं, तथापि अुसे आये दिन शक्की और धैर्यशून्य प्राणियोंके अपशब्द सुनने पड़ते थे। पर महादेव अविचलित गाम्भीर्यसे सब कुछ सुना करता था। ज्योंही वह कलह शान्त होता, वह अपने तोतेकी ओर देखकर पुकार अुठता—"सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता।" अिस मंत्रको जपते ही अुसके चित्तको पूर्ण शान्ति प्राप्त हो जाती थी।

२

अेक दिन संयोगवश किसी लड़केने पिंजडेका द्वार खोल दिया। तोता अुड़ गया। महादेवने सिर अुठाकर जो पिंजड़ेकी ओर देखा तो अुसका कलेजा सन्न हो गया। तोता कहाँ गया? अुसने फिर पिंजड़ेको देखा, तो तोता गायब था। महादेव घबड़ाकर अुठा और अिधर-अुधर खपरैलोंपर निगाह दौड़ाने लगा। अुसे संसारमें कोअी वस्तु प्यारी थी, तो वह यही तोता था। लडके-बालों, नाती-पोतोंसे अुसका जी भर गया था। लड़कोंकी चुलबुलसे अुसके काममें विघ्न पड़ता था। बेटोंसे अुसे प्रेम न था, अिसलिये नहीं कि वे निकम्मे थे, बल्कि अिसलिये कि अुनके कारण वह अपने आनन्ददायी कुल्हड़ोंकी नियमित संख्यासे वंचित रह जाता था। पड़ोसियोंसे अुसे चिढ़ थी, अिसलिये कि वे अुसकी अँगीठीसे आग निकाल ले जाते थे। अिन समस्त विघ्न-बाधाओंसे अुसके लिये कोअी पनाह थी तो वह यही तोता था। अिससे अुसे किसी प्रकारका कष्ट न होता। वह अब अुस अवस्थामें था, जब मनुष्यको शान्ति-योगके सिवा और किसी बातकी अिच्छा नहीं रहती।

तोता अेक खपरैलपर बैठा था। महादेवने पिंजड़ा अुतार लिया और अुसे दिखाकर कहने लगा—"आ, आ, सत्त गुरुदत्त शिव-

दत्त दाता।" लेकिन गाँव और घरके लड़के अेकत्र होकर चिल्लाने और तालियाँ बजाने लगे, अूपरसे कौवोंने काँव काँवकी रट लगा दी। तोता अुड़ा और गाँवके बाहर निकलकर पेड़पर जा बैठा। महादेव खाली पिंजड़ा लिये अुसके पीछे दौड़ा, हाँ दौड़ा। लोगोंको अुसकी द्रुतगामितापर अचंभा हो रहा था। मोहकी अिससे सुन्दर, अिससे सजीव, अिससे भावमय कल्पना नहीं की जा सकती!

दोपहर हो गयी थी। किसान लोग खेतोंसे चले आ रहे थे, अुन्हें विनोदका अच्छा अवसर मिला। महादेवको चिढ़ानेमें सभीको मज़ा आता था, किसीने कंकड़ फेंके, किसीने तालियाँ बजायीं। तोता फिर अुड़ा और वहाँसे दूर आमके बागमें अेक पेड़की फुनगीपर जा बैठा। महादेव फिर खाली पिंजड़ा लिये मेढ़ककी भाँति अुचकता हुआ चला। बागमें पहुँचा तो पैरके तलुओंसे आग निकल रही थी, सिर चक्कर खा रहा था। जब ज़रा सावधान हुआ तो फिर पिंजड़ा अुठाकर कहने लगा—"सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता।" तोता फुनगीसे अुतरकर नीचेकी अेक डालपर आ बैठा, किन्तु वह महादेवकी ओर सशंक नेत्रोंसे ताक रहा था। महादेव समझा—"डर रहा है।" वह पिंजड़ेको छोड़कर अेक पेड़की आड़में छिप गया। तोतेने चारों ओर ग़ौरसे देखा, निश्शंक हो गया, अुतरा और आकर पिंजड़ेके अूपर बैठ गया। महादेवका हृदय अुछलने लगा। 'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त' का मंत्र जपता हुआ धीरे धीरे तोतेके समीप आया और लपका कि तोतेको पकड़ लूँ, किन्तु तोता हाथ न आया; फिर पेड़पर जा बैठा। साँझ तक यही हाल रहा। तोता कभी अिस डालपर जाता, कभी अुस डालपर। कभी पिंजड़ेपर आ

बैठता कभी पिंजड़ेके दुवारपर बैठकर अपने दाना-पानीकी प्यालियों-को देखता, फिर अुड़ जाता। बुड्ढा अगर मूर्तिमान मोह था, तो तोता मूर्तिमती माया। यहाँ तक कि शाम हो गयी, माया और मोहका यह संग्राम अन्धकारमें विलीन हो गया!

३

रात हो गयी। चारों ओर निबिड़ अंधकार छा गया। तोता न जाने पत्तोंमें कहाँ छिपा बैठा था। महादेव जानता था कि रातको तोता कहीं अुड़कर नहीं जा सकता और न पिंजड़े ही में आ सकता है, तिसपर भी वह अिस जगहसे हिलनेका नाम न लेता था। आज अुसने दिन-भर कुछ नहीं खाया, रातके भोजनका समय भी निकल गया, पानीका अेक बूँद भी अुसके कंठमें न गया। लेकिन अुसे न भूख थी, न प्यास। तोतेके बिना अुसे अपना जीवन निस्सार, शुष्क और सूना जान पड़ता था। वह दिन-रात काम करता था, अिसलिये कि यह अुसकी अन्तःप्रेरणा थी; जीवनके और काम अिसलिये करता था कि आदत थी। अिन कामोंमें अुसे अपनी सजीविताका लेशमात्र भी ज्ञान न होता था। तोता ही वह वस्तु था, जो अुसे चेतनाकी याद दिलाता था। अुसका हाथसे जाना, जीवका देह-त्याग करना था।

महादेव, दिन-भरका भूखा-प्यासा, थका-माँदा, रह रहकर झपकियाँ ले लेता था, किन्तु अेक क्षणमें फिर चौंककर आँख खोल देता और अुस विस्तृत अंधकारमें अुसकी आवाज़ सुनायी देती—"सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता।"

आधी रात गुज़र गयी थी। सहसा वह कोअी आहट पाकर चौंका, तो देखा कि दूसरे पेड़के नीचे अेक धुँधला दीपक जल रहा

है और कअी आदमी बैठे हुअे आपसमें कुछ बातें कर रहे है। वह सब चीलम पी रहे थे। तमाखूकी महकने महादेवको अधीर कर दिया। वह अुच्च स्वरसे बोला—"सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता।" और अुन आदमियोंकी ओर चिलम पीने चला। किन्तु जिस प्रकार बन्दूककी आवाज़ सुनते ही हिरन भाग जाते हैं अुसी प्रकार अुसे आते देखकर वह सब-के-सब अुठकर भागे। कोअी अिधर गया, कोअी अुधर। महादेव चिल्लाने लगा—"ठहरो, ठहरो!" अेकाअेक अुसे ध्यान आ गया, यह सब चोर है। वह ज़ोरसे चिल्ला अुठा—"चोर, चोर! पकड़ो, पकड़ो!" चोरोंने पीछे फिरकर भी न देखा।

महादेव दीपकके पास गया, तो अुसे अेक कलसा रखा हुआ मिला। वह मोरचेसे काला हो रहा था। महादेवका हृदय अुछलने लगा। अुसने कलसेमे हाथ डाला, तो मोहरें थीं। अुसने अेक मोहर बाहर निकाली और दीपकके अुजालेमें देखा, हाँ मोहर थी। अुसने तुरन्त कलसा अुठा लिया, दीपक बुझा दिया और वह पेड़के नीचे छिपकर बैठ रहा। साहुसे चोर बन गया। अुसे फिर शंका हुअी, अैसा न हो, चोर लौट आयें और मुझे अकेला देखकर मोहरें छीन लें। अुसने कुछ मोहरें कमरमें बाँधीं, फिर अेक सूखी लकड़ीसे ज़मीनकी मिट्टी खोदकर कअी गड्ढे बनाये। अुन्हें मोहरोंसे भरकर मिट्टीसे ढँक दिया।

४

महादेवके अन्तर्नेत्रोंके सामने अब अेक दूसरा ही जगत था, चिन्ताओं और कल्पनाओंसे परिपूर्ण। यद्यपि अुसे कभी कोषके हाथसे निकल जानेका भय था, पर अभिलाषाओंने अपना काम शुरू कर दिया। अेक पक्का मकान बन गया, सराफ़ेकी अेक

दूकान खुल गयी, निज सम्बन्धियोंसे फिर नाता जुड़ गया, विला-
सकी सामग्रियाँ अेकत्रित हो गयीं, तब तीर्थयात्रा करने चला और
वहाँसे लौटकर बड़े समारोहसे यज्ञ और ब्रह्मभोज हुआ। अिसके
बाद अेक शिवालय और अेक कुआँ बन गया, अेक अुद्यान भी
आरोपित हो गया और वहाँ वह नित्य-प्रति कथा-पुराण सुनने
लगा। साधु-सन्तोंका आदर-सत्कार होने लगा।

अकस्मात् अुसे ध्यान आया, कहीं चोर आ जायँ तो मैं
भागूँगा क्योंकर? अुसने परीक्षा करनेके लिये कलसा अुठाया
और वह दो सौ पग तक बेतहाशा भागता हुआ चला गया। जान
पड़ता था, अुसके पैरोंमें पर लगे हैं। चिन्ता शांत हो गयी।
अिन्हीं कल्पनाओंमें रात बीत गयी। अूषाका आगमन हुआ, हवा
जगी, चिड़ियाँ गाने लगीं। सहसा महादेवके कानोंमें आवाज़ आयी-

"सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता,
रामके चरणमें चित्त लागा।"

यह बोल सदैव महादेवकी जिह्वापर रहता था। दिनमें हजारों
बार ये शब्द अुसके मुखसे निकलते थे, पर अुनका धार्मिक भाव
कभी अुसके अंतकरणको स्पर्श न करता था। जैसे किसी बाजेसे
राग निकलता है, अुसी प्रकार अुसके मुँहसे यह बोल निकलता था,
निरर्थक और प्रभाव-शून्य। तब अुसका हृदय-रूपी वृक्ष नव पल्लव
विहीन था। यह निर्मल वायु अुसे गुंजरित न कर सकती। पर
अब अुस वृक्षमें कोपलें और शाखाअें निकल आयी थीं; वह अिस
वायु-प्रवाहसे झूम अुठा, गुञ्जित हो गया।

अरुणोदयका समय था। प्रकृति अेक अनुरागमय प्रकाशमें
डूबी हुअी थी। अुसी समय तोता परोंको जोड़े हुअे अूँची डालीसे

अुतरा, जैसे आकाशसे कोअी तारा टूटे, और आकर पिंजड़ेमें बैठ गया। महादेव प्रफुल्लित होकर दौड़ा और पिंजड़ेको अुठाकर बोला—

"आओ आत्माराम, तुमने कष्ट तो बहुत दिया, पर मेरा जीवन भी सफल कर दिया। अब तुम्हें चाँदीके पिंजड़ेमें रखूँगा और सोनेमें मढ़ दूँगा।" अुसके रोम-रोमसे परमात्माके गुणानुवादकी ध्वनि निकलने लगी—"प्रभु, तुम कितने दयावान् हो। यह तुम्हारा असीम वात्सल्य है, नहीं तो मुझ जैसा पापी, पतित प्राणी कब अिस कृपाके योग्य था!" अिन पवित्र भावोंसे अुसकी आत्मा विह्वल हो गयी। वह अनुरक्त होकर बोला—

"सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता,
रामके चरणमें चित्त लागा।"

अुसने अेक हाथमें पिंजड़ा लटकाया, बगलमें कलसा दबाया और घर चला।

५

महादेव घर पहुँचा तो अभी कुछ अँधेरा था। रास्तेमें अेक कुत्तेके सिवाय किसीसे भेंट न हुअी और कुत्तेको मोहरोंसे विशेष प्रेम नहीं होता। कलसेको अेक नाँदसे अच्छी तरह ढँककर वह अपनी कोठरीमें रख आया। जब दिन निकल आया तो सीधे वह पुरोहितजीके घर जा पहुँचा। पुरोहितजी पूजापर बैठे सोच रहे थे—"कल ही मुक़द्दमेकी पेशी है और हाथमें कौड़ी भी नहीं। यजमानोंमें कोअी साँस भी नहीं लेता।" अितनेमें महादेवने पालागन किया। पंडितने मुँह फेर लिया—यह अमंगल-मूर्ति कहाँसे आ पहुँची? मालूम नहीं दाना भी मयस्सर

होगा या नहीं । रुष्ट होकर पूछा—"क्या है जी, क्या कहते हो, जानते नहीं कि हम अिस बेला पूजापर रहते हैं ?" महादेवने कहा—"महाराज, आज मेरे यहाँ सत्यनारायणकी कथा है ?"

पुरोहितजी विस्मित हो गये, कानोंपर विश्वास न हुआ । महादेवके घर कथाका होना अुतनी ही असाधारण घटना थी, जितनी अपने घरसे किसी भिखारीके लिये भीख निकालना । पूछा—"आज क्या है"

महादेव बोला—"कुछ नहीं, अैसी ही अिच्छा हुअी कि आज भगवानकी कथा सुन लूँ ।"

प्रभात ही से तैयारी होने लगी । बेदों और अन्य निकटवर्ती गाँवोंमें सुपारी फिरी । कथाके अुपरान्त भोजका भी नेवता था । जो सुनता, आश्चर्य करता । यह आज रेतमें दूब कैसे जमी ! संध्या समय जब सब लोग जमा हो गये, पंडितजी अपने सिंहासनपर विराजमान हुअे, तो महादेव खड़ा होकर अुच्च स्वरसे बोला—

"भाअियो, मेरी सारी अुम्र छल-कपटमें कट गयी । मैंने न जाने कितने आदमियोंको दग़ा दिया, कितना खरेको खोटा किया; पर अब भगवानने मुझपर दया की है । वह मेरे मुखकी कालिख को मिटाना चाहते है । मैं आप सभी भाअियोंसे ललकारकर कहता हूँ कि जिसका मेरे जिम्मे जो कुछ आता हो, जिसकी जमा मैंने मार ली हो, जिसके चोखे मालको खोटा कर दिया हो, वह आकर अपना अेक अेक कौड़ी चुका ले । अगर कोअी यहाँ न आ सका हो, तो आपलोग अुससे जाकर कह दीजिये, कलसे अेक माह तक जब जी चाहे आये और अपना हिसाब चुकता कर ले । गवाही-साखीका काम नहीं ।"

सब लोग सन्नाटेमें आ गये। कोअी मार्मिक भावसे सिर हिलाकर बोला—"हम कहते न थे?" किसीने अविश्वाससे कहा—"क्या खाके भरेगा? हजारोंका टोटल हो जायगा।"

अेक ठाकुरने ठठोली की—"और जो लोग सुरधाम चले गये?"

महादवने अुत्तर दिया—"अुनके घरवाले ता होंगे?"

किन्तु अिस समय लोगोंको वसूलीकी अुतनी अिच्छा न थी जितनी यह जाननेकी कि अिसे अितना धन मिल कहाँसे गया। किसीको महादेवके पास आनेका साहस न हुआ। देहातके आदमी गड़े मुर्दे अुखाड़ना क्या जानें? फिर प्रायः लोगोंको याद भी न था कि अुन्हें महादेवसे क्या पाना है, और अैसे पवित्र अवसरपर भूल-चूक हो जानेका भय अुनका मुँह बन्द किये हुअे था। सबसे बड़ी बात यह थी कि महादेवकी साधुताने अुन्हें वशीभूत कर लिया था। अचानक पुरोहितजी बोले—"तुम्हें याद है, मैंने तुम्हें अेक कंठा बनानेके लिये सोना दिया था और तुमने कअी माशे तौलमें अुड़ा दिये थे?"

महादेव—"हाँ, याद है; आपका कितना नुकसान हुआ होगा?"

पुरोहित—"५०) से कम न होगा।"

महादेवने कमरसे दो मोहरें निकालीं और पुरोहितजीके सामने रख दीं।

पुरोहितकी लोलुपतापर टीकाअें होने लगीं। यह बेअीमानी है; बहुत हुआ तो दो-चार रुपयेका नुकसान हुआ होगा। बेचारेसे ५०) अैंठ लिये। नारायणका भी डर नहीं। बननेको पंडित, पर नीयत अैसी खराब! राम राम! लोगोंको महादेवसे अेक श्रद्धा-सी हो गयी। अेक घंटा बीत गया, पर अुन सहस्रों मनुष्योंमेंसे अेक

भी न खड़ा हुआ। तब महादेवने फिर कहा—“मालूम होता है, आपलोग अपना हिसाब भूल गये हैं। अिसलिये आज कथा होने दीजिये। मैं अेक महीने तक आपकी राह देखूँगा। अिसके पीछे तीर्थयात्रा करने चला जाअूँगा। आप सब भाअियोंसे मेरी विनती है कि आप मेरा अुद्धार करें।”

अेक माह तक महादेव लेनदारोंकी राह देखता रहा। रातको चोरोंके डरसे नींद न आती। अब वह कोअी काम न करता। शराबका चसका भी छूटा। साधु-अभ्यागत जो द्वारपर आ जाते, अुनका यथायोग्य सत्कार करता। दूर दूर तक अुसका सुयश फैल गया। यहाँ तक कि महीना पूरा हो गया और अेक आदमी भी हिसाब चुकाने न आया। अब महादेवको ज्ञान हुआ कि संसार बुरोंके लिये तो बुरा है, पर अच्छोंके लिये अच्छा।

६

अिस घटनाको हुअे ५० वर्ष बीत चुके हैं। आप बेदों जाअिये तो दूर ही से अेक सुनहला कलश दिखायी देता है। यह ठाकुर-द्वारेका कलश है। अुससे मिला हुआ अेक तालाब है, जिसमें खूब कमल खिले रहते हैं। अुसकी मछलियाँ कोअी नहीं पकड़ता। तालाबके किनारे अेक विशाल समाधि है। यही आत्मारामका स्मृति-चिह्न है। अुनके सम्बन्धमें विभिन्न किम्वदन्तियाँ प्रचलित हैं। कोअी कहता है, “अुनका रत्नजटित पिंजड़ा स्वर्गको चला गया।” कोअी कहता है, “वह ‘सत्त गुरुदत्त’ कहते हुअे अन्तर्धान हो गये।” पर यथार्थ यह है कि अुस पक्षी-रूपी चन्द्रको किसी बिल्ली-रूपी राहुने ग्रस लिया। लोग कहते हैं, “आधी रातको अभी तक तालाबके किनारे आवाज आती है—

"सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता
रामके चरनमें चित्त लागा।"

महादेवके विषयमें जितनी जनश्रुतियाँ हैं अुनमें सबसे मान्य यह है कि 'आत्माराम' के समाधिस्थ होनेके बाद वह कअी संन्यासियोंके साथ हिमालय चले गये और वहाँसे लौटकर न आये। अुनका नाम 'आत्माराम' प्रसिद्ध हो गया।

अिक्केवाला

स्टेशनके बाहर आकर मैंने अपने साथी मनोहरलालसे कहा—"कोअी अिक्का मिल जाय तो अच्छा—दस मीलका रास्ता है।"

मनोहरलाल बोले—"आअिये, अिक्के बहुत है। अुस तरफ खड़े होते हैं।"

हम दोनों चले। लगभग दो सौ गज चलनेके पश्चात् देखा, तो सामने अेक बड़े वृक्षके नीचे तीन-चार अिक्के खड़े दिखायी दिये। अेक अिक्का अभी आया था और अुसपरसे दो आदमी अपना असबाब अुतार रहे थे। मनोहरलालने पुकारा—"कोअी अिक्का गंगापुर चलेगा?"

अेक अिक्केवाला बोला—"आअिये सरकार, मै ले चलूँ। कै सवारी हैं?"

"दो सवारी—गंगापुरका क्या लोगे ?"

"जो सब देते हैं, वह आप दे दीजियेगा !"

"आखिर कुछ मालूम तो हो ?"

"दो रुपयेका निरख (निर्ख) ह ।"

"दो रुपये ?—अितना अंधेर !"

अिसी समय जो लोग अभी आये थे, अुनमें और अुनके अिक्केवालेमे झगड़ा होने लगा । अिक्केवाला बोला—"यह अच्छी रही, वहाँसे डेढ़ रुपया तय हुआ, यहाँ बीस ही आने दिखाते है !"

यात्रियोंमेंसे अेक बोला—"हमने पहले ही कह दिया था कि हम बीस आनेसे अेक पैसा अधिक न देंगे ।"

"मैंने भी तो कहा था, कि डेढ़ रुपयेसे अेक पैसा कम न लूँगा ।"

"कहा होगा, हमने तो सुना नहीं !"

"हाँ, सुना नहीं—अैसी बात आप काहेको सुनेंगे !"

"अच्छा, तुम्हें बीस आने मिलेंगे—लेना हो तो लो, नहीं अपना रास्ता देखो ।"

अिक्केवाला, जो हृष्ट-पुष्ट तथा गौरवर्ण था, अकड़ गया । बोला—"रास्ता देखें, कोअी अंधेर है ! अैसे रास्ता देखने लगें तो बस कमाअी कर चुके । बायें हाथसे अिधर डेढ़ रुपया रख दीजिये, तब आगे बढ़ियेगा ! वहाँ तो बोले, 'अच्छा, जो तुम्हारा रेट होगा, वह देंगे ।' अब यहाँ कहते है, रास्ता देखो—अच्छे मिले !"

हमलोग यह कथोपकथन सुनकर अिक्का करना भूल गये और अुनकी बातें सुनने लगे । अेक यात्री बड़ी गम्भीरतापूर्वक बोला—"देखो जी, यदि तुम भलमनसीसे बातें करो, तो दो-चार

पैसे हम अधिक दे सकते हैं, तुम गरीब आदमी हो; लेकिन जो झगड़ा करोगे तो अेक पैसा न मिलेगा।"

अिक्केवाला किंचित् मुस्कराकर बोला—"दो-चार पैसे! ओफ़ ओह! आप तो बड़े दाता मालूम होते हैं! जब चार पैसे देते हैं, तो चार आने ही क्यों नहीं देते?"

"चार आने हमारे पास नहीं हैं।"

"नहीं हैं—अच्छी बात है; तो जो आपके पास हो वही दे दीजिये। न हो, न दीजिये और ज़रूरत हो तो अेकाध रुपया मैं आपको दे सकता हूँ।"

"तुम बेचारे क्या दोगे; चार चार पैसेके लिये तो तुम झूठ बोलते हो और बेओमानी करते हो।"

"अरे बाबूजी, लाखों रुपयेके लिये तो मैंने बेओमानी की नहीं—चार पैसेके लिये बेओमानी करूँगा? बेओमानी करता तो अिस समय अिक्का न हाँकता होता। खैर, आपको जो देना हो, दे दीजिये, नहीं तो जाअिये; मैंने किराया भर पाया।"

अुन्होंने बीस आने निकालकर दिये। अिक्केवालेनें चुपचाप ले लिये।

अुस अिक्केवालेका आकार-प्रकार, अुसकी बातचीतसे मुझे कुछ अैसा प्रतीत हुआ कि अन्य अिक्केवालोंकी तरह यह साधारण आदमी नहीं है। अिसमें कुछ विशेषता अवश्य है; अतअेव मैंने सोचा कि यदि हो सके, तो गंगापुर अिसी अिक्केपर चलना चाहिये। यह सोचकर मैंने अुससे पूछा—"क्यों भाअी, गंगापुर चलोगे?"

वह बोला—"हाँ, हाँ! आअिये!"

"क्या लोगे ?"

"वही डेढ़ रुपया !"

मैंने सोचा, अन्य अिक्केवाले तो दो रुपये माँगते थे, यह डेढ़ रुपया कहता है, आदमी सच्चा मालूम होता है। यह सोचकर मैंने कहा—"अच्छी बात है, चलो; डेढ़ रुपया देंगे।"

हम दोनों सवार होकर चले। थोड़ी दूर चलनेपर मैंने पूछा—"ये दोनों कौन थ ?" अिक्केवालेने कहा—"नारायण जाने, कौन थे। परदेसी मालूम होते हैं; लेकिन परले सिरेके झूठे और बेअीमान ! चार आनेके लिये प्राण तजे दे रहे थे !"

मैंने पूछा—"तो सचमुच तुमसे डेढ़ रुपया ही तय हुआ था ?"

"और नहीं क्या आप झूठ समझते हैं ? बाबूजी, यह पेशा ही बदनाम है, आपका कोअी कसूर नहीं। अिक्के, ताँगेवाले सदा झूठे और बेअीमान समझे जाते हैं; और होते भी हैं—अधिकतर तो अैसे ही होते हैं। अिन्हें चाहे आप रुपयेकी जगह सवा दीजिये तब भी संतुष्ट नहीं होते।"

मैंने पूछा—"तुम कौन जाती हो ?"

"मैं ? मैं तो सरकार वैश्य हूँ।"

"अच्छा ! वैश्य होकर अिक्का हाँकते हो ?"

"क्यों सरकार, अिक्का हाँकना कोअी बुरा काम तो है नहीं ?"

"नहीं, मेरा मतलब यह नहीं है कि अिक्का हाँकना कोअी बुरा काम है। मैंने अिसलिये कहा कि वैश्य तो बहुधा व्यापार करते हैं।"

"यह भी तो व्यापार ही है।"

"हाँ, है तो व्यापार ही।"

मैं मन-ही-मन अपनी अिस बेतुकी बातपर लज्जित हुआ; अतअेव मैंने प्रसंग बदलनेके लिये पूछा—"कितने दिनोंसे यह काम करते हो?"

"दो बरस हो गये।"

"अिसके पहले क्या करते थे?"

यह सुनकर अिक्केवाला गम्भीर होकर बोला—"क्या बताअूँ, क्या करता था!"

अुसकी अिस बातसे तथा यात्रियोंसे अुसने जो बातें कही थीं, अुनका तारतम्य मिलाकर मैंने सोचा—अिस व्यक्तिका जीवन रहस्यमय मालूम होता है। यह सोचकर मैंने अुससे पूछा—"कोअी हर्ज न समझो, तो बताओ।"

"हर्ज तो कोअी नहीं है बाबूजी! पर मेरी बातपर लोगोंको विश्वास नहीं होता। अिक्केवाले बहुधा परले सिरेके गप्पी समझे जाते हैं, अिसलिये मैं किसीको अपना हाल सुनाता नहीं।"

"खैर, मैं अुन आदमियोंमें नहीं हूँ, यह तुम विश्वास रखो।"

"अच्छी बात है, सुनिये—

"मैं अगरवाला बनिया हूँ। मेरा नाम श्यामलाल है। मेरा जन्मस्थान मैनपुरी है। मेरे पिता व्यापार करते थे। जिस समय मेरे पिताकी मृत्यु हुअी, अुस समय मेरी अुम्र पंद्रह सालकी थी। पिताके मरनेपर घर-गृहस्थीका सारा भार मेरे अूपर पड़ा। मैंने अेक वर्ष तक कामकाज चलाया; पर मुझे व्यापारका अनुभव न था, अिस कारण घाटा हुआ और मेरा सब काम बिगड़ गया। अन्तमें और कोअी अुपाय न देख मैंने वहीं अेक धनी आदमीके

यहाँ नौकरी कर ली। अुस समय मेरे परिवारमें मेरी माता और अेक छोटी बहन थी। जिनके यहाँ नौकरी की थी, वह थे तो मालदार, परंतु बड़े कंजूस थे। अूपरसे देखनेमें वह अेक मामूली हैसियतके आदमी दिखाअी पड़ते थे; परन्तु लोग कहते थे कि अुनके पास अेक लाखके लगभग नक़द रुपया है। अुस समय मैने लोगोंकी बातपर विश्वास नहीं किया था, क्योंकि घरकी हालत देखनेसे किसीको विश्वास नहीं हो सकता था कि अुनके पास अितना रुपया होगा। अुनकी अुम्र अुस समय चालीसके अूपर थी। अुन्होंने दूसरी शादी की थी और अुनकी पत्नीकी अुम्र बीस वर्षके लगभग थी। पहली स्त्रीसे अुनके अेक लड़का था। वह जवान था और अुसका विवाह अित्यादि सब हो चुका था। अुसका नाम शिवचरणलाल था। पहले तो वह अपने पिताके पास ही रहता था; परन्तु जब पिताने दूसरा विवाह किया, तो वह नाराज़ होकर अपनी स्त्री-सहित फ़र्रुखाबाद चला गया। वहाँ अुसने अेक दूकान कर ली और वहीं रहने लगा।

"अुन दिनों मुझे कसरत करनेका बड़ा शौक था, अिसलिये मेरा बदन बहुत अच्छा बना हुआ था। कुछ दिनों पश्चात् मेरी मालकिन मेरी बहुत ख़ातिर करने लगी। खूब मेवा-मिठाअी खिलाती थीं और महीनेमें दस-बीस रुपये नक़द दे देती थीं। अिस कारण दिन बड़ी अच्छी तरह कटने लगे। मैने मालकिनके ख़ातिर करनेका असली मतलब अुस समय नहीं समझा। मैने जो समझा, वह यह था, कि मेरी सेवासे प्रसन्न होकर तथा मुझे ग़रीब समझकर वह अैसा करती है। आख़िर जब अेक दिन अुन्होंने मुझे अेकान्तमें बुलाकर छेड़-छाड़ की, तब मेरी आँखें खुलीं।"

अिक्केवालेकी अिस बातपर मेरे मित्र मनोहरलाल बहुत हँसे। बोले—"तुम तो बिलकुल बुद्धू थे जी!"

"बस, अुसी दिनसे मेरी खातिर बन्द हो गयी। केवल खातिर ही बन्द रह जाती, तब तो गनीमत थी; परन्तु अब अुन्होंने मुझे तंग करना आरंभ किया। बात बातपर डाँटती थीं। कभी मालिकसे शिकायत कर देती थीं। आखिर जब अेक दिन मालिकने मुझे मालकिनके कहनेसे बहुत डाँटा, तो मैंने अुन्हें अलग ले जाकर कहा—'लालाजी, मेरा हिसाब कर दीजिये, मैं अब आपके यहाँ नौकरी नहीं करूँगा।' लालाजी लाल-पीली आँखें करके बोले—अेक तो क़सूर करता है और अुसपर हिसाब माँगता है?' मुझे भी तेहा आ गया। मैंने कहा—'क़सूर किसने किया है?' लालाजी बोले—'तो क्या मालकिन झूठ कहती हैं?' मैंने कहा—'बिलकुल झूठ!' लालाजीने कहा—'तुझसे अुनकी शत्रुता है क्या?' मैंने कहा—'हाँ, शत्रुता है।' अुन्होंने पूछा—'क्यों?' मैंने कहा—'अब आपसे क्या बताअूँ? आप अुसे भी झूठ मानेंगे। अिसलिये सबसे अच्छी बात यही है कि मेरा हिसाब कर दीजिये।' मेरी बात सुनकर लालाजीके पेटमे खलबली मची। अुन्होंने कहा—'पहले यह बता, कि क्या बात है?' मैंने कहा—'अुसके कहनेसे कोअी फ़ायदा नहीं, आप मेरा हिसाब दे दीजिये।' परन्तु लाला मेरे पीछे पड़ गये। मैंने विवश होकर सब हाल बता दिया। मुझे भय था कि लालाको मेरी बातपर विश्वास न होगा; पर अैसा नहीं हुआ। लालाने मेरी पीठपर हाथ फेरकर कहा—'शाबाश श्यामलाल, मैं तुमपर बहुत प्रसन्न हूँ। अब तुम आनन्दसे रहो, तुम्हारी तरफ़ कोअी आँख अुठाकर नहीं देख सकेगा।' बस, अुस

दिनसे मैं निर्द्वन्द्व हो गया। अब अधिकतर मैं मालिकके पास बाहर ही रहने लगा, भीतर बहुत कम जाता था। अुसके पश्चात् भी मालकिनने मेरे निकलवानेके लिये चेष्टा की; पर लालाने अुनकी अेक न सुनी। आखिर वह भी हारकर बैठ रहीं।

"अिसके छ महीने बाद अेक दिन लालाको हैज़ा हो गया। मैंने बहुत दौड़-धूप की, अिलाज अित्यादि कराया; पर कोअी फ़ायदा न हुआ। लालाजी समझ गये कि अन्त समय निकट है; अतअेव अुन्होंने मुझे बुलाकर कहा—'श्यामलाल, मैं तुझे अपना नौकर नहीं, पुत्र समझता हूँ; अिसलिये मैं अपनी कोठरीकी ताली तुझे देता हूँ। मेरे मरनेपर ताली मेरे लड़केको दे देना और जब तक वह आ न जाय, तब तक किसीको कोठरी न खोलने देना। बस, तुझसे मैं अितनी अन्तिम सेवा चाहता हूँ।'

"मैंने कहा—'अैसा ही होगा। चाहे मेरे प्राण ही क्यों न चले जायँ; पर मैं अिसमें अन्तर न पड़ने दूँगा।' अिसके पश्चात् अुन्होंने मुझे पाँच हजार रुपये नक़द दिये और बोले—'यह लो, मैं तुम्हें देता हूँ।' मैं लेता न था; पर अुन्होंने कहा—'तू यदि यह न लेगा, तो मुझे दुःख होगा।' अतअेव मैंने ले लिये। अिसके चार घंटे बाद अुनका देहान्त हो गया। अुनके लड़केको अुनके मरनेके तीन घंटे पहले तार दे दिया था। वह अुनके मरनेके पाँच घंटे बाद मैनपुरी पहुँचा था। अुनका देहान्त रातको आठ बजे हुआ और तार रातके दो बजेके निकट पहुँचा था। लालाके मरनेके बाद अुनकी स्त्रीने कहा—'कोठरीकी ताली लाओ।' मैंने कहा—'ताली तो लाला शिवचरणलालके हाथमें देनेको कह गये हैं, मै अुन्हींको दूँगा।' अुन्होंने कहा—'अरे मूर्ख, अिससे तुझे क्या मिलेगा? कोठरी

खोलकर रुपया निकाल ले, मुझे मत दे, तू ले ले, मैं भी तेरे साथ रहूँगी, जहाँ तू ले चलेगा, तेरे साथ चलूँगी।' मैंने कहा—'मुझसे यह नहीं होगा। मैं तुम्हें ले जाकर रखूँगा कहाँ? दूसरे, तुम मेरे अुस मालिककी स्त्री हो, जो मुझे अपने पुत्रके समान मानता था। मुझसे यह न होगा।'

"बाबूजी, अेक घंटे तक अुसने मुझे समझाया, रोअी भी, हाथ भी जोड़े; परन्तु मैंने अेक न मानी। आखिर अुसने अन्य अुपाय न देख अपने देवर, अर्थात् अुन्हींको बुलवाया जिनका आना-जाना मैंने बद करवाया था। अुन्होंने आते ही बड़ा रुआब झाड़ा। मुझे पुलिसमें देनेकी धमकी दी; पर मै अिससे भयभीत न हुआ। तब वह ताला तोड़नेपर आमादा हुअे। मैं कोठरीके दूआरपर अेक मोटा डंडा लेकर बैठा गया और मैंने अुनसे कह दिया कि जो कोअी ताला तोड़ने आयगा, पहले मैं अुसका सिर तोडूँगा, अिसके बाद जो होगा देखा जायगा। बस, फिर अुनका साहस न हुआ। अिसी रगड़े-झगड़ेमें रातके दो बज गये और शिवचरणलाल आ गये। अुनको ताली दे दी और सब हाल बता दिया।

"बाबूजी, जब कोठरी खोली गयी, तो अुसमेंसे साठ हजार रुपये नक़द निकले। अिन रुपयोंका हाल लालाके अतिरिक्त और किसीको भी मालूम न था। यदि मैं मालकिनकी बात मानकर बीस-पच्चीस हज़ार रुपये भी निकाल लेता तो किसीको कोअी सन्देह न होता; पर मेरे मनमें अिस बातका विचार अेक क्षणके लिये भी पैदा न हुआ। मेरी माँ रोज़ रामायण पढ़कर मुझे सुनाया करती थी, और मुझे यही समझाया करती थी कि, 'बेटा, पाप और बेअीमानीसे सदा बचना, अिससे तुझे कभी दुःख न होगा।'

अुसकी यह बात मेरे जीमें बसी हुअी थी और अिसीलिये मैं बच गया। अुसके बाद शिवचरणलालने भी मुझे अेक हज़ार रुपया दिया। साथ ही अुन्होंने यह कहा कि तुम मेरे पास रहो; पर लालाके मरनेसे और जो अनुभव मुझे हुअे थे, अुनके कारण मैंने अुनके यहाँ रहना अुचित न समझा। लालाकी तेरही होनेके बाद मैंने अुनकी नौकरी छोड़ दी। छ हज़ार रुपयेमेंसे दो हज़ार मैंने अपनी बहनके ब्याहमें खर्च किये और दो हज़ार लगाकर अपना ब्याह किया। अेक हज़ार लगाकर अेक दूकान की और अेक हज़ार रखा; पर दूकानमें फिर घाटा हुआ। तब मैंने मैनपुरी छोड़ दी और अिधर चला आया। नौकरी करनेकी अिच्छा नहीं थी; अिसलिये मैंने अिक्का-घोड़ा खरीद लिया और किरायेपर चलाने लगा। तबसे बराबर यही काम कर रहा हूँ। अिसमें मुझे खाने-भरको मिल जाता है। अपने आनन्दसे रहता हूँ, न किसीके लेनेमें हूँ न देनेमें। अब बताअिये, वह बाबू कहते थे कि चार आने पैसेके लिये मैं बेअीमानी करता हूँ। मै अुनसे क्या कहता? यह तो दुनिया है, जो जिसकी समझमें आता है, कहता है। मैं भी सब सुन लेता हूँ। अिक्क़ेवाले बदनाम हैं; अिसलिये मुझे भी ये बातें सुननी पड़ती हैं।"

श्यामलालकी आत्म-कहानी सुनकर मैं कुछ देर तक स्तब्ध बैठा रहा। अिसके पश्चात् मैंने कहा—"भाअी, तुम तो दर्शनीय आदमी हो, तुम्हारे तो चरण छूनेको जी चाहता है।"

श्यामलाल हँसकर बोला—"अजी बाबूजी, क्यों काँटोंमें घसीटते हो? मेरे चरण और आप छुअें—राम! राम! मैं कोअी साधु थोड़ा ही हूँ!"

मैंने कहा—"और साधु होते कैसे हैं? अुनके कोअी सुर्खाबका पर तो लगा होता नहीं। सच्चे साधु तो तुम्हीं हो।"—यह सुनकर श्यामलाल हँसने लगा। अिसी समय गंगापुर आ गया और हम-लोग अिक्केसे अुतरकर अपने निर्दिष्ट स्थानकी ओर चल दिये।

रास्तेमें मैंने मनोहरलालसे कहा—"अिस संसारमें अनेकों लाल गुदड़ीमें छिपे पड़े है। अुन्हें कोअी जानता तक नहीं।"

मनोहरलाल—"जी हाँ! और नामधारी ढोंगी महात्मा अीश्वरकी तरह पूजे जाते हैं।"

बात बहुत पुरानी हो गयी है। पता नहीं, महात्मा श्यामलाल अब भी जीवित हैं या नहीं; परन्तु अब भी जब कभी अुनका स्मरण हो आता है, तो मैं अुनकी काल्पनिक मूर्तिके चरणोंमें अपना मस्तक नत कर देता हूँ।

कठिन शब्दार्थ

अपना अपना भाग्य

पृष्ठ १-११

प्रमोद-गृह—आहार-विहार, क्रीड़ा (आदि का घर
पार्श्व—बगल
ताल—तालाब
किश्ती—नाव
डोंगियाँ—छोटी नावें
सरपट—तेजीके साथ
बंसी—मछली पकड़नेकी बाँसकी लग्गी
समूची—सारी
अविरल—घना
अविरत—लगातार
ओर-छोर—अेक चीज़के दो सिरे
अिठलाना—गर्व दिखलाना
तने—शानमें अकड़े
चिथड़े—फटे-पुराने कपड़े
दुम हिलाना—चापलूसी करना
नौनिहाल—होनहार छोटे बच्चे
बुजुर्ग—बूढ़े, बड़े
निरापद—बिना आपत्तिका
दामन—कपड़ेका पल्ला
तह—कपड़ेकी परत
सिमटना—अँग सिकोड़ना
सहमी सहमी—डरी डरी-सी
खुरचना—छीलना
संसृति—संसार, सृष्टि
खिसियाकर—कुछ चिढकर
सनक—लहर
झुर्रियाँ—बदनपरकी सिकुड़न
दोशाला—ओढ़नेकी अूनी चादर
चंपत होना—भाग जाना
मसहरी—मच्छरदानी
सकपकाना—हिचकना
बेहयाअी—निर्लज्जता
कफ़न—मृत्यु समयका कपड़ा जो शवपर डाला जाता है।

मिठाअीवाला

पृष्ठ १२-२०

मादक—मदभरा
स्नेहाभिषिक्त-मुहब्बतसे भराहुआ
अंतर्व्यापी—अंदर फैला हुआ
हिलोर—लहर
निरखती—देखती
साफ़ा—सिरकी पगड़ी

अहसान–अुपकार
अप्रतिम–अनुपम
लागत–असली क़ीमत
दस्तूर–रिवाज़
तरकीब–अुपाय
आजानु-विलंबित–घुटने तक लटकनेवाली
ज़ायकेदार–स्वादिष्ट
पोपला–बिना दाँतका
हर्ज़–नुकसान
अठखेलियाँ–बचपनके खेल-कूद

अमर जीवन

पृष्ठ २१-३०

खिसककर–आगे सरककर
डाह–ओीर्ष्या, जलन
झुँझलाना–गुस्सा होना
नालिश–फरियाद
चसका-व्यसन
आघात–चोट
क़हक़हे–ठठाकर हँसनेकी आवाज़
तपाकसे–आवेशसे
तमतमाना–गुस्सा होना
धौंस–डाँट
आभा–शोभा, तेज

शरणागत

पृष्ठ ३१-४०

बीहड़–कठिन
ढोर–जानवर, चौपाये
बसेरा–रहनेकी जगह
पेशगी–पहले दी हुअी रक़म
शामत–आफ़त
पौर–देहरी
दाअूजू–बड़े भाअी
मुक़र्रर–कायम, नियुक्त
भोर–सुबह
टस-से-मस न होना–बिलकुल न मानना
टटोली–ढूंढ़ी
अंटी–कमरके अूपर धोतीकी लपेट
सेंत-मेंत–मुफ़्त ही
झख मारना–लाचार होना
तंग–परेशान

मधुआ

पृष्ठ ४१-४९

महक–गंध
चसका–शौक, लत
लच्छेदार–दिलचस्प, लम्बे-चौड़े
खुमारी–नशा
कुहरा–कुहासा
कटकटी लगना–सरदी मालूम होना
पराठेवाला–रोटी बनानेवाला
गड़रिया–भेड़ पालनेवाला
टीस–दर्द, दुःख

रँगरेलियाँ–आमोद-प्रमोद
आहें–दुखःमें ली जानेवाली लम्बी साँसें
बला–बोझ, आफ़त
अंगीठी–कोयला जलानेका लोहेका चूल्हा
ठिठुरना–ठंडसे सिकुड़ना
खाल–चमड़ी
सिसकी–रोनेकी अस्पष्ट ध्वनि
कड़ाकेकी–तेज
तरावट–ताज़गी
सोंधी–स्वादिष्ट
सीली–भीगी हुअी
तिलमिलाकर–चौंधियाकर, लड़खड़ाकर
नियति–भाग्य
अंगड़ाअी–आलस्यसे शरीर अेंठनेकी क्रिया
झल्लाकर–चिढ़कर
सान–अस्त्र वगैरह तेज़ करनेका पत्थर
बटोरना–अिकट्ठा करना

आत्माराम

पृष्ठ ५०-६०

सायबान–घरके आगेका छप्पर
जर्जर–जीर्ण, वृद्ध
भोर–सुबह
बाट–भाग, हिस्सा
शक्की–शक (संशय) करनेवाला
कुल्हड़–मिट्टीका प्याला, लुटिया
पनाह–त्राण, शरण
द्रुतगामिता–तेजीके साथ चलना
फुनगी–पेड़की डालीका आखिरी हिस्सा
आहट–ध्वनि
महक–गंध
बेतहाशा–बड़ी तेजीसे
कोंपल–अंकुर
नाँद–मिट्टीका वर्तन
मयस्सर–प्राप्त, सुलभ
दूब–हरी घास, दूर्वा
पालागन–पैर छूना, वंदन
ठठोली–मज़ाक
चसका–लत, आदत

अिक्केवाला

पृष्ठ ६०-७०

कै–कितने
निरख(निर्ख)–दर
अपना रास्ता देखो–चले जाओ
हृष्ट-पुष्ट–तन्दुरुस्त
भलमनसीसे–अच्छी तरह, अच्छे आदमीकी तरह
परले सिरेके–अव्वल दर्जेके
बेतुकी–बेमेल

हैसियत–प्रतिष्ठा, स्थिति
खातिर–प्रतिष्ठा, मान
नफ़रत–घृणा
तेहा–गुस्सा
निर्द्वन्द्व–बेखटके, स्वच्छंद
ख़ैरियत–अच्छाअी, भलाअी
प्रलोभन–लालच
सुपुर्द–हवाले
आँख फूटी पीर गयी–झंझट दूर हुअी
हैज़ा–कॉलेरा
रुआब–शान, रोब

आमादा–तैयार
तेरही–मृत्युके तेरहवें दिनका भोज व अन्य क्रियाअें
स्तब्ध–चुप
सुर्खाबका पर लगाना–कोअी खासियत होना, अनोखापन या विलक्षणता
निर्दिष्ट–बताअे हुअे
गुदड़ीके लाल–छिपे हुअे महान् लोग
नत–नीचा

अभ्यासके लिये प्रश्नावली

१. 'अपना अपना भाग्य' कहानीके आधारपर नैनीतालकी सन्ध्याका वर्णन अपनी भाषामें कीजिये।

२. 'अपना अपना भाग्य'के आधारपर 'पहाड़ी बालक'की दयनीय दशाका वर्णन कीजिये।

३. 'अपना अपना भाग्य' कहानी सरल हिन्दीमे लिखिये।

* *

१. किन्हीं दोका संक्षेपमें अुत्तर दीजिये:—

(अ) मिठाअीवाला बच्चोंके प्रति प्रेम क्यों रखता था?

(आ) 'मिठाअीवाला' कहानीमें मुरलीवालेके स्वभावका चित्रण कीजिये।

(अि) मिठाअीवाला बच्चोंसे किस तरह व्यवहार करता था?

२. मिठाअीवालेकी निजी कहानी क्या थी?

३. 'रोहिणी' अपने पड़ोसियोंसे 'मिठाअीवाला' कहानी किस तरह कहेगी?

* *

१. किन्हीं दो प्रश्नोंका अुत्तर दीजिये:—

(अ) अिन्द्रनाथने नौकरीसे अिन्कार करके अमर जीवन क्यों पसंद किया?

(आ) लौटकर अिन्द्रनाथने अपनी पत्नी मनोरमासे क्या क्या कहा?

(अि) बाबू अिन्द्रनाथने अमर जीवन किस तरह प्राप्त किया?

२. संक्षेपमें चरित्र चित्रण कीजिये:—

(१) बाबू अिन्द्रनाथ (२) मनोरमा

३. 'अमर जीवन' कहानी संक्षेपमें लिखिये।

* *

१. 'शरणागत' कहानी रज्जबकी पत्नीके शब्दोंमें लिखिये।

२. 'शरणागत' कहानीके ठाकुरके स्वभावका वर्णन कीजिये।

* *

१. किन्हीं दोका संक्षेपमें अुत्तर दीजिये :—

(अ) मधुआके लिये शराबीके मनमें हमदर्दी क्यों पैदा हुअी ?

(आ) शराबीने अपनी शराबकी लत कैसे और क्यों छोड़ी ?

(अि) शराबी अपना जीवन किस तरह बिताता था ?

२. मधुआ कौन था ? अुसने शराबीके जीवनमें कायापलट कैसे की ?

३. अिनमेंसे अेक कहानी अपनी पसंदगीके कारण देते हुअे संक्षेपमें लिखिये :—

(१) आत्माराम (२) मधुआ (३) अिक्केवाला

* *

१. (अ) अिनमेंसे किसी अेकका जवाब दीजिये :—

(१) तोताके अुड़ जानेपर महादेवने अुसे प्राप्त करने लिये क्या क्या किया ?

(२) मोहरोंका कलसा पाकर महादेवने क्या किया ?

(आ) महादेवका चरित्र-चित्रण कीजिये ।

२. महादेव सोनारके कौटुंबिक जीवनका वर्णन कीजिये ।

३. महादेवको यह कैसे ज्ञात हुआ कि "संसार बुरोंके लिये बुरा है, पर अच्छोंके लिये अच्छा ।"

* *

१. अिक्केवालेकी आत्मकहानी संक्षेपमें लिखते हुअे श्यामलालके स्वभावका चित्रण कीजिये ।

२. "अिक्केवाला गुदड़ीमें छिपा हुआ अेक लाल है," कहानीके आधारपर अिसे स्पष्ट कीजिये ।

३. मिठाअीवाला, ठाकुर और अिन्द्रनाथ, अिन व्यक्तियोंमेंसे किसे आप अधिक पसन्द करते है ? क्यों ? अुसका संक्षेपमें चरित्र-चित्रण कीजिये ।